- कफ सिरप का कहर
- महाशक्ति के सामने औरत की जीत
- चार पीढ़ियों की काव्य-गूंज
- रायपुर-विशाखापट्टनम सुरंग ने जोड़ा विकास का सेतु

लाईफ वर्सिटी

छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

वर्ष- 03 अंक -07 अक्टूबर 2025 मूल्य - 50 रू.

www.scgnews.in

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/108/2024-26 RNI No. CHHHIN/2023/87466

संघ का शताब्दी महोत्सव

मोदी की गारंटी से संवर रहा छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव 25

₹47,000 करोड़
की लागत से
रेल परियोजनाओं का क्रियान्वयन

₹40 लाख से अधिक
परिवारों को स्वच्छ पेयजल
जल जीवन मिशन

₹26 लाख
परिवारों का पक्के घर का सपना साकार
पीएम आवास योजना

₹59 हजार
परिवारों को मिल रहा लाभ
पीएम जनमन योजना

₹6,691
ग्राम लाभान्वित
धरती आबा ग्राम उत्कर्ष अभियान

₹40,000 करोड़
से अधिक की लागत से
राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास

₹69 लाख से अधिक
महिलाओं के खातों में पहुँचे
₹12,376 करोड़
महतारी वंदन योजना

₹25.47 लाख
किसानों के खातों में पहुँचे
₹9,765 करोड़
पीएम किसान सम्मान निधि

सुशासन से समृद्धि की ओर

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

हमसे जुड़ने के लिए QR स्कैन करें

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

संवाद- 13469/5

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क | Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

लाईफ वर्सिटी नवगूँज

कवि सम्मेलन 2025

www.phzinfo.com

Positive Health Zone

Integrated Holistic Health Care System

Unique Wellbeing Center

Holistic Healthcare Team

Our INTEGRATED SERVICES

Holistic Path Of Wellness & Wellbeing

1. **Personal Energy Blueprint at Quantum Veda Lab with Latest Quantum Devices-**

   Aura, Chakra, Biofield, Lifeforce Energy Analysis.

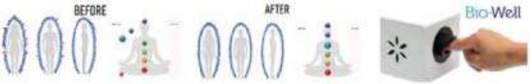

2. **Digital Nadi Parikshan Modern Nadi Veda Pulse -**

   Personality Analysis Body Type, Mind Type, Energy Type.

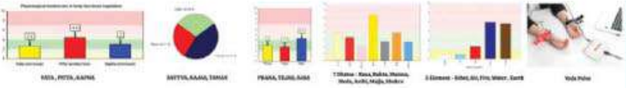

3. **Life Style Clinic**

   Personalised Diet Plan, Lifestyle Plan, Day Plan, Detox Plan as per your Quantum Analysis.

4. **Body Detox & Rejuvenation with Kerala Ayurveda Panchkarma.**

5. **Mind Detox & Stress Management with NLP & Counselling.**

6. **Inner Alingment, Chakra Balancing with PNP Meditation.**

Get In Touch
9109185028, 9109185025

A-41, Amrapali Society,
Near Ganga Diagnostics, Raipur, Chhattisgarh

www.phzinfo.com

सम्पादक
नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

प्रबंधक
हर्षित पाण्डेय

सलाहकार मण्डल

डॉ अनिल गुप्ता	रायपुर
डॉ उदयभान सिंह चौहान	रायपुर
प्रो. डॉ शुभ्रा सान्याल	नई दिल्ली
प्रो तपन मोहन्ति	ओड़िसा

छत्तीसगढ़ कार्यालय
ए-32, आम्रपाली सोसाइटी, कलर्स मॉल के पीछे, पचपेड़ी नाका
रायपुर (छ.ग.)
मो. 88171-94979

मध्यप्रदेश कार्यालय
अनामिका पाण्डेय
गोकुलधाम बेलौहान टोला, सामान, रीवा मप्र

प्रतिनिधि

अम्बुज अग्निहोत्री	जबलपुर
संजीव पाण्डेय	भोपाल
राजेश सिंह	बिलासपुर

कानूनी सलाहकार
संजयेंदु पंड्या

परिकल्पना
रजनीकांत पाण्डेय

अंदर के पृष्ठों पर

03 संघ का शताब्दी महोत्सव

9 केन्द्र और छत्तीसगढ़ सरकार बस्तर और समस्त नक्सल ....

7 छत्तीसगढ़ केयर कनेक्ट में 3,119 करोड़ का निवेश प्रस्ताव

21 घरेलू हिंसा– समाज की छुपी जंजीरें

16 जब सिस्टम सो गया, और मासूम मर गए

27 मन का युद्ध भूमि

....मोहन यादव का दृष्टिकोण	11
महाशक्ति के सामने औरत....	13
एक मुलाक़ात, अनगिनत...	14
बिहार की राजनीति में ..	18
चार पीढ़ियों की काव्य-गूंज	28

SCAN & PAY

UPI ID: 329944413263914@cnrb

लाईफ वर्सिटी के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा बुरहानी प्रिंटर्स, सत्ती बाजार रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979
E-mail : scgnewsraipur@gmail.com | www.scgnews.in

जब विकास और विवेक आमने–सामने खड़े हों

दुनिया बदलती है, लेकिन मानसिकताएँ उतनी तेज़ी से नहीं बदलतीं।

गाज़ा पर दो साल से जारी इज़राइली हमले और रवांडा के 1994 के नरसंहार ने यह स्पष्ट किया है कि जानकारी होने के बावजूद संवेदनशीलता हमेशा मौजूद नहीं रहती। आज, जब सोशल मीडिया हर सत्य को तुरंत दिखाता है, सवाल केवल यह है – क्या हम देखने के बावजूद संवेदनहीन हो गए हैं? भारत के लिए यह आत्मचिंतन का समय है।

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सम्पादक

हम विश्वगुरु बनने का सपना देखते हैं, पर भीतर आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संतुलन तलाश रहे हैं। जीएसटी और डिजिटलीकरण जैसे सुधार धीरे-धीरे हमारी अर्थव्यवस्था को संरचित और भरोसेमंद बना रहे हैं। सोने के बढ़ते दाम और सुरक्षित निवेश की ओर लौटता रुझान सिर्फ महंगाई का नहीं, बल्कि वैश्विक अस्थिरता और भारतीय समाज के विश्वास का भी संकेत है।

राज्य स्तर पर छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश इस संतुलन की मिसाल हैं। छत्तीसगढ़ ने कृषि, ग्रामीण स्वास्थ्य और सौर ऊर्जा में साइलेंट रिवॉल्यूशन किया है। गांव अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि उत्पादक भी बन रहे हैं।

मध्यप्रदेश ने पर्यटन के माध्यम से सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहर को आर्थिक इंजन में बदला है, जहाँ ग्रामीण महिला स्व-सहायता समूह और होम-स्टे मॉडल हज़ारों परिवारों की आय का स्रोत बने हैं।

दशहरा और दिवाली अब केवल धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक ऊर्जा के प्रतीक हैं। छोटे कस्बों में भी खरीदारी, नए व्यवसाय और उम्मीद की चमक लौट रही है।

सुप्रीम कोर्ट में हाल ही में हुई घटना – न्यायाधीश पर जूता फेंकने का प्रयास – हमें याद दिलाती है कि धार्मिक और संवेदनशील मामलों में न्यायपालिका को सतर्क और जिम्मेदार रहना कितना जरूरी है।

आज भारत की अर्थव्यवस्था, नीति और आस्था – तीनों एक नई तालमेल में हैं। अनुशासन और विश्वास के इस संगम से ही विकास की गति, समाज की ऊर्जा और संस्कृति की गहराई तय होती है। यह तालमेल ही निर्धारित करेगा कि हम विश्वगुरु बनने की राह पर हैं, या केवल विश्वबाजार का हिस्सा बनकर रह जाएँगे।

श्रद्धा, शक्ति और शंका के बीच भारत का आत्म-संवाद

संघ का शताब्दी महोत्सव

नरेंद्र पाण्डेय

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

भगवान श्रीकृष्ण के ये अविनाशी शब्द केवल महाभारत के संवाद नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति की जीवनी शक्ति हैं। यह शक्ति हमें याद दिलाती है कि जब-जब धर्म का नाश और अधर्म का बोलबाला होता है, जब संस्कृति पर आक्रमण होते हैं, तब ईश्वरीय शक्ति स्वयं अवतरित होती है। त्रेतायुग में भगवान श्रीराम के रूप में, द्वापर में श्रीकृष्ण के रूप में, और आजकल राष्ट्रीय चेतना के रूप में—राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में—यही शक्ति हमारे बीच रही है।

1925 की विजयादशमी को नागपुर में डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित यह संगठन आज सौ वर्ष पूरे कर चुका है। सौ साल का समय कोई छोटी अवधि नहीं। ऐसे में सवाल उठता है कि अन्य संगठनों की तरह यह थका क्यों नहीं, ठहरा क्यों नहीं, और अब तक इतने व्यापक रूप से कैसे कायम रहा? उत्तर सरल है—संघ केवल संस्था नहीं, यह विचार, अनुशासन और समर्पण का संगम है।

संघ का ध्येय उसकी प्रार्थना में स्पष्ट है—

संघ की ऊर्जा उसके स्वयंसेवकों की निष्ठा, चरित्र और उद्देश्य के प्रति उत्कटता से आती है। यही शक्ति आज सवा लाख शाखाओं और लाखों स्वयंसेवकों के रूप में सामने है।

'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे' भारत माता की जय।' यह केवल शब्द नहीं, यह एक जीवनदर्शन है। किसी के विरोध के लिए संघ अस्तित्व में नहीं आया, न ही यह किसी विरोध की भावना से संचालित है। संघ की ऊर्जा उसके स्वयंसेवकों की निष्ठा, चरित्र और उद्देश्य के प्रति उत्कटता से आती है। यही शक्ति आज सवा लाख शाखाओं और लाखों स्वयंसेवकों के रूप में सामने है।

संघ की यात्रा आसान नहीं रही। स्थापना के शुरुआती वर्षों में ही विरोध और भ्रमों का सामना करना पड़ा। उसे साम्प्रदायिक संगठन बताने का प्रयास किया गया, मुस्लिम विरोधी कहकर बदनाम करने की कोशिश हुई। लेकिन समय और तथ्य ने सभी आरोपों को झूठा साबित किया। देश में भयंकर दंगे हुए, आपातकाल आया, अयोध्या में विवादित ढांचे का मामला उठा—लेकिन संघ ने कभी अपनी मूल चेतना और उद्देश्य से समझौता नहीं किया।

संघ की शक्ति उसकी शाखा है। शाखा केवल खेल और योग का मैदान नहीं; यह राष्ट्र के लिए व्यक्ति निर्माण की कार्यशाला है।

यहां बालक, युवा और प्रौढ़ समान भाव से राष्ट्र सेवा और समाज निर्माण की शिक्षा प्राप्त करते हैं। जाति, ऊँच-नीच का कोई भेदभाव नहीं—सिर्फ राष्ट्र और समाज के लिए निष्ठा और समर्पण है। यही कारण है कि संघ सौ वर्षों में दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन बन सका।

अब संघ अपनी शताब्दी वर्ष की वर्षगांठ मनाते हुए समाज के पांच प्रमुख परिवर्तन अभियान चला रहा है—जिसे पंच परिवर्तन कहा जा रहा है। पहला—सामाजिक समरसता। आज जातिवाद, भेदभाव और अलगाववाद हमारे समाज की सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। संघ इसे समाप्त करने का अभियान चला रहा है। दूसरा—पर्यावरण संरक्षण। आज विश्व ही नहीं, हमारा देश भी पर्यावरणीय संकट से जूझ रहा है। तीसरा—कुटुंब प्रबोधन। परिवार का विघटन, रिश्तों का क्षरण—यह हमारी सामाजिक समरसता के लिए खतरा है। चौथा—स्वदेशी और स्वाभिमान। आत्मनिर्भरता, स्वदेशी भाषा, संस्कृति और धर्म के प्रति गर्व जागृत करना। और पांचवां—नागरिक कर्तव्य। एक सजग नागरिक ही समाज और राष्ट्र का आधार बन सकता है।

संघ ने अपने सौ वर्षों में यह स्पष्ट कर दिया है कि संगठन का आकार, शक्ति और प्रसार केवल बाहरी रूप से नहीं, बल्कि उसके मूल उद्देश्य, अनुशासन और समर्पण से तय होता है। संघ एक जीवन दर्शन है, एक चेतना है, और सबसे महत्वपूर्ण—एक अनुभव है। इसे समझने के लिए सिर्फ देखना नहीं, इसमें उतरना, शाखा में जाना, और स्वयंसेवक के रूप में अनुभव करना जरूरी है।

जैसे भगवान कहते हैं—'यदा यदा धर्म का नाश होता है, तदा मैं स्वयं अवतरित होता हूँ'—वैसे ही संघ ने सौ वर्षों में साबित किया है कि जब समाज और संस्कृति संकट में होती है, तब धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए एक जीवंत शक्ति अवतरित होती है।

आज जब संघ सौ वर्ष पूरे कर रहा है, तो यह केवल एक संगठन की सफलता नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्र चेतना की विजय है। और यही विजय, यही संदेश, यही ऊर्जा—समग्र भारत के लिए भविष्य का मार्गदर्शन करती है।

शरद की इस विजयादशमी पर जब आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने नागपुर के रेशमबाग मैदान से अपना पारंपरिक भाषण शुरू किया, तब केवल परंपरा नहीं, इतिहास भी उपस्थित था। संघ अपने सौवें वर्ष में प्रवेश कर चुका है — और सौ साल का यह मुकाम, किसी संगठन के लिए नहीं, बल्कि एक वैचारिक प्रवाह के लिए भी आत्मदर्शन का अवसर होता है।

लेकिन इस बार का भाषण, आत्मदर्शन से अधिक आत्मसुरक्षा का प्रतीक था।

भागवत ने पहलगाम के आतंकवादी हमले से आरंभ किया — और यह आरंभ प्रतीकात्मक था। उन्होंने कहा, 'हम सबके प्रति मित्रभाव रखते हैं, पर सुरक्षा के विषय में सजग रहना पड़ेगा।'

यह वाक्य मात्र आतंकवाद के संदर्भ में नहीं था; यह एक चेतावनी स्वर था — जो संघ की परंपरागत शब्दावली में 'सजगता' कहलाता है, परंतु राजनीति की भाषा में यह 'चेतना और चिंता' दोनों का संकेत देता है।

पहलगाम से संघ तक — सुरक्षा का नया अर्थ

भागवत का पहला वाक्य 'हमला हुआ सीमा पार के आतंकियों द्वारा' भले भौगोलिक था, लेकिन इसका सामाजिक भूगोल कहीं गहरा था।

यह हमला केवल पहलगाम पर नहीं, बल्कि 'मित्रभाव' की अवधारणा पर था।

उन्होंने इसे 'समाज की एकता और दृढ़ता का चित्र' कहा — यानी यह भारत की सामूहिक चेतना की परीक्षा थी।

लेकिन अगले ही वाक्य में जब उन्होंने कहा — 'हमें यह ध्यान में आया कि हमारे मित्र कौन हैं और कहाँ तक हैं,' तो यह एक कूटनीतिक टिप्पणी थी।

यह संदेश विदेश नीति के गलियारों में भी सुना गया और देश के भीतर भी।

कहीं यह इशारा अमेरिका के टैरिफ़ रवैये की ओर था, तो कहीं वैश्विक मित्रताओं के शर्तिया रूप पर एक व्यंग्य।

नक्सलवाद — विकास की अनुपस्थिति से उपजा विद्रोह

भागवत का दूसरा फ़ोकस बिंदु था — नक्सलवाद।

उन्होंने कहा कि 'न्याय और विकास का अभाव ही उग्रवाद की जड़ है।'

यह स्वीकारोक्ति उस विचारधारा से भिन्न थी जो लंबे समय तक केवल दमन और नष्ट करने को ही समाधान मानती रही।

संघ प्रमुख का यह कथन — 'उनका नियंत्रण तो हो जाएगा, पर न्याय और सद्भावना भी स्थापित होनी चाहिए' — प्रशासन को एक स्पष्ट सामाजिक दिशा देता है।यहाँ भागवत एक राजनीतिक-वैचारिक स्थिति से हटकर सामाजिक पुनर्संतुलन की बात करते हैं।

मगर यही वह बिंदु है जहाँ उनका संदेश सरकार के प्रदर्शन पर एक सूक्ष्म टीका बन जाता है।

क्योंकि जब संघ प्रमुख कहते हैं कि विकास वहाँ तक पहुँचना चाहिए, तो यह सीधा प्रश्न बन जाता है — 'अब तक क्यों नहीं पहुँचा?'

नेपाल, श्रीलंका और जेनरेशन ज़ी — नई अस्थिरता का भय

भागवत ने अपने भाषण में कहा —

'प्रशासन जनता के पास नहीं रहता, संवेदनशील नहीं रहता तो असंतोष रहता है।'

यह पंक्ति नेपाल, श्रीलंका और बांग्लादेश की घटनाओं के संदर्भ में कही गई थी, पर इसका प्रतिबिंब भारत के भीतर भी दिखाई देता है।

वो मानो चेतावनी दे रहे थे — 'यह असंतोष संक्रमणीय है।'

आज भारत की युवा पीढ़ी — विशेषकर 'जेनरेशन ज़ी' — बेरोज़गारी, महंगाई और जीवन असुरक्षा के बीच अर्थहीन स्वतंत्रता की अनुभूति कर रही है।

भागवत ने इसी को 'उलटी और घातक विचारधारा' कहा।

यह उनके शब्दों में चिंता थी, पर राजनीति की भाषा में यह संकेत भी था — कि सत्ता को अब केवल राष्ट्रवाद के भावनात्मक कवच से युवाओं को बाँधे रखना पर्याप्त नहीं होगा।

भूख, बेरोज़गारी और भागवत का मौन संकेत

जब वे कहते हैं — 'समाज में मोहभंग हुआ है,' तो यह केवल नक्सल इलाकों की बात नहीं।

यह बयान उस व्यापक बेचैनी का भी प्रतीक है जो भारत के कस्बों, शहरों और कॉलोनियों में धीरे-धीरे पनप रही है।

आज यदि करोड़ों लोग मुफ्त राशन पर निर्भर हैं, तो यह नीतियों की संवेदनशीलता का नहीं, अर्थव्यवस्था की विफलता का संकेत है।

संघ का नेटवर्क देश के हर गाँव तक है। उन्हें पता है कि रसोई में गैस खत्म होने की शिकायत अब 'सरकार' से जोड़ी जाती है, 'राष्ट्र' से नहीं।

इसलिए भागवत का यह कहना — 'समर्थ बनना पड़ेगा' — कहीं न कहीं सरकार को जगाने की कोशिश भी है।

धार्मिक सहिष्णुता — बयान या आत्मसंघर्ष?

भागवत ने कहा —

'हमारे अपने बंधु हैं जो अन्य पंथ स्वीकार कर देश में रहते हैं। हमें उन्हें अलगाव से नहीं देखना चाहिए।'

यह वाक्य सुनने में उदार लगता है, लेकिन इसके पीछे संघ की छवि-चिंता झलकती है।

क्योंकि यही संगठन तब सवालों के घेरे में आता है जब किसी राज्य में भीड़ किसी अल्पसंख्यक को पीट देती है।

उनका यह कथन — 'कानून हाथ में लेना प्रवृत्ति नहीं बननी चाहिए' — एक नैतिक दूरी बनाने का प्रयास है।

पर सवाल यही है कि क्या संघ अपने ही विंग्स — विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल — को वही संयम सिखा सकता है?

या यह सहिष्णुता केवल भाषण की सजावट है?

श्रद्धा से शंका तक

मोहन भागवत का यह भाषण एक दिलचस्प द्वंद्व को उजागर करता है —

एक ओर 'संघ की श्रद्धा' है, दूसरी ओर 'समाज की शंका'।

संघ चाहता है कि भारत विश्व का नैतिक मार्गदर्शक बने; पर भारत के भीतर भूख, भय और बेरोज़गारी के सवाल उसका रास्ता रोक रहे हैं।

सौ वर्ष का यह अवसर केवल उत्सव नहीं, आत्मसमीक्षा का अवसर था।

भागवत ने राष्ट्र की नब्ज़ तो सही पकड़ी — लेकिन दवा का नाम लेने से पहले ही भाषण समाप्त कर दिया।

विजयादशमी का दिन था — पर विचारों की इस लड़ाई में 'विजय' अभी अधूरी है।

संघ और सत्ता – दूरी या समझौता?

स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री मोदी ने आरएसएस की प्रशंसा की थी, और अब संघ प्रमुख ने मोदी सरकार पर कोई सीधा कटाक्ष नहीं किया।

यह वही संघ है जिसने पहले अनुच्छेद 370, राम मंदिर और समान नागरिक संहिता जैसे विषयों को 'तीन प्रमुख उद्देश्य' बताया था – और अब तीनों लगभग पूरे हो चुके हैं। तो क्या अब संघ संतुष्ट है? या वह इस बात से असहज है कि बीजेपी ने 'संघ से बड़ा संघ' बनने की दिशा पकड़ ली है?

पिछले चुनावों में आरएसएस का सक्रिय न होना और बीजेपी का बहुमत घट जाना – यह एक राजनीतिक संकेत था।

जेपी नड्डा का यह कथन – 'बीजेपी को अब आरएसएस की जरूरत नहीं' – उस संवाद को और ठंडा कर गया। पर संघ ने अपने मौन से ही सत्ता को उत्तर दिया – कि 'कौन किस पर निर्भर है।' भागवत का इस बार किसी विवादास्पद मुद्दे पर न बोलना, इस बात का प्रमाण है कि संघ अब सार्वजनिक संघर्ष नहीं चाहता। वह सत्ता के साथ तालमेल में रहकर अपनी विचारधारा को नीति स्तर पर साकार देखना चाहता है।

सौ साल का आत्ममंथन जो रह गया अधूरा

संघ की परंपरा में विजयादशमी भाषण केवल विचार नहीं, दिशा होती है। लेकिन इस बार का भाषण एक प्रकार का सुरक्षात्मक वक्तव्य बनकर रह गया। ना तो इसमें आत्ममंथन था, ना आत्मालोचन। मोहन भागवत से यह अपेक्षा थी कि वह 'गोलवलकर युग' से आगे बढ़कर संघ की विचार यात्रा का पुनर्मूल्यांकन करेंगे।

पर उन्होंने वही कहा जो दशकों से कहा जाता रहा है – संस्कृति, राष्ट्रभावना, सजगता और आत्मगौरव।

यह सब आवश्यक अवश्य है, पर जब समाज भूख, बेरोज़गारी और सामाजिक विभाजन से जूझ रहा हो, तब वैचारिक कवच पर्याप्त नहीं रहता।

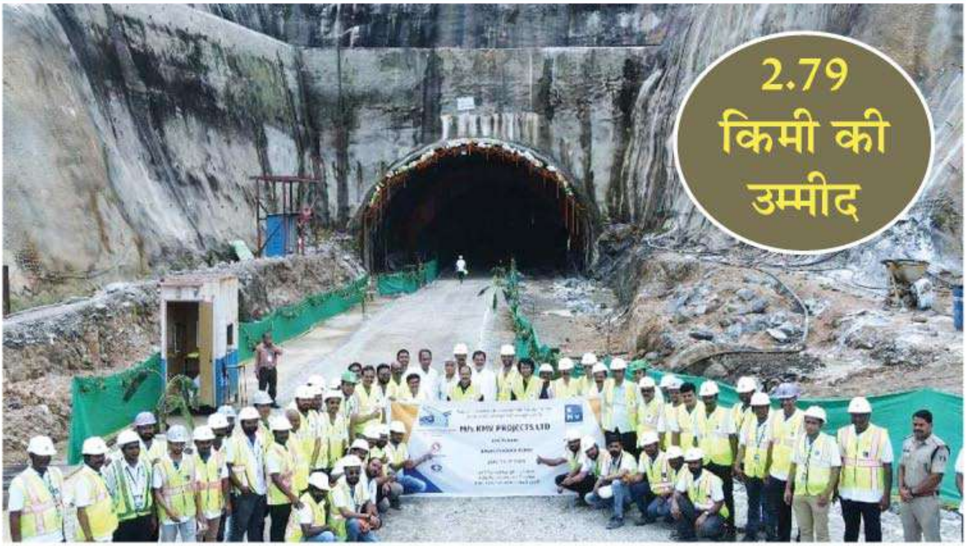

रायपुर–विशाखापट्टनम सुरंग ने जोड़ा विकास का सेतु

छत्तीसगढ़ की धरती ने शनिवार को अपने विकास के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। 2.79 किलोमीटर लंबी राष्ट्रीय राजमार्ग सुरंग — जो रायपुर-विशाखापट्टनम आर्थिक गलियारे (NH-130CD) का हिस्सा है — अब वास्तविकता बन चुकी है। यह सिर्फ सीमेंट और स्टील की सुरंग नहीं, बल्कि संभावनाओं, प्रगति और आत्मनिर्भरता की एक जीवंत राह है।

राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) की अबहानपुर प्रोजेक्ट यूनिट द्वारा महज़ 12 महीनों में निर्मित यह ट्विन-ट्यूब सुरंग न केवल इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण है, बल्कि यह इस बात का प्रतीक भी है कि जब संकल्प मजबूत हो, तो समय भी झुक जाता है। एक दिशा की सुरंग पूर्ण हो चुकी है, और जैसे ही दूसरी दिशा भी चालू होगी — रायपुर से विशाखापट्टनम की यात्रा न केवल तेज़ होगी, बल्कि आर्थिक रिश्तों का एक नया अध्याय भी शुरू होगा।

वास्तव में, यह सुरंग केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं है, बल्कि तीन राज्यों — छत्तीसगढ़, ओडिशा और आंध्रप्रदेश — के बीच सांस्कृतिक और आर्थिक सेतु के रूप में उभरने जा रही है। अब तक जिन पहाड़ी रास्तों और लंबी यात्राओं में लोग थकान ढूंढते थे, वहाँ अब अवसरों की गूंज सुनाई देगी।

विकास के प्रवाह के लिए भी रास्ता खोलेगी: साय

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इसे 'समृद्ध और सशक्त छत्तीसगढ़ की दिशा में ऐतिहासिक कदम' बताया। उन्होंने कहा — 'यह सुरंग सिर्फ यात्रियों के लिए नहीं, बल्कि विकास के प्रवाह के लिए भी रास्ता खोलेगी। पर्यटन, उद्योग, और सामाजिक एकीकरण — सब कुछ इस एक सुरंग के भीतर धड़कता दिखाई देगा।'

आर्थिक गलियारा बनने से औद्योगिक लॉजिस्टिक्स को नई रफ्तार मिलेगी, व्यापारिक ट्रांसपोर्ट अधिक कुशल होगा, और पर्यटन के नये द्वार खुलेंगे — विशेषकर बस्तर, कांकेर और धमतरी जैसे इलाकों के लिए, जहाँ सड़कें अक्सर विकास की राह में बाधा थीं।

छत्तीसगढ़ की इस सुरंग को 'विकास की धड़कन' कहा जा सकता है — क्योंकि यह उस हिस्से को जोड़ रही है जो अब तक भूगोल से तो भारत का हिस्सा था, पर विकास से दूर था।

जैसे ही सुरंग में पहली रोशनी जली, वैसे ही छत्तीसगढ़ के भविष्य का नया उजाला भी फूट पड़ा। यह उजाला बताता है कि जब सरकार की नीयत स्पष्ट हो, और इंजीनियरों की मेहनत अडिग — तो पहाड़ भी रास्ता बन जाते हैं।

यह सिर्फ सड़क नहीं है, यह सपनों की डगर है — जो रायपुर से विशाखापट्टनम नहीं, बल्कि वर्तमान से भविष्य तक जाती है।

छत्तीसगढ़ केयर कनेक्ट में 3,119 करोड़ का निवेश प्रस्ताव

7000 से अधिक रोजगार के अवसर होंगे सृजित | स्वास्थ्य, वेलनेस और पर्यटन निवेश का नया युग

निवेश अनुकूल नई औद्योगिक नीति से छत्तीसगढ़ बन रहा है निवेशकों का पसंदीदा डेस्टिनेशन

पिछले 10 महीने में प्रदेश सरकार को मिला लगभग 7 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव

छत्तीसगढ़ अब केवल कोर सेक्टर तक सीमित नहीं है, बल्कि आने वाले समय में यह वेलनेस, हेल्थकेयर और पर्यटन के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय पहचान बनाएगा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज ओमाया गार्डन, रायपुर में आयोजित छत्तीसगढ़ केयर कनेक्ट कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही।

मुख्यमंत्री साय ने अपने उद्बोधन की शुरुआत शारदीय नवरात्रि की शुभकामनाओं से की और कहा कि यह आयोजन ऐसे समय में हो रहा है, जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लागू जीएसटी 2.0 ने अर्थव्यवस्था को सरलता, पारदर्शिता और तेजी की दिशा में आगे बढ़ाया है। इस सुधार ने निवेशकों और उद्यमियों के लिए अभूतपूर्व अवसर खोले हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के विज़न के साथ कदमताल करते हुए प्रदेश सरकार ने विकसित छत्तीसगढ़ का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को साकार करने के लिए पिछले डेढ़ वर्ष में 350 से अधिक सुधार लागू किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि अब हम इज ऑफ डूइंग बिज़नेस से आगे बढ़कर स्पीड आफ डूइंग बिज़नेस के युग में प्रवेश कर चुके हैं।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि नई औद्योगिक नीति छत्तीसगढ़ की प्रगति की आधारशिला है। इसी नीति ने निवेशकों का भरोसा बढ़ाया है और यही कारण है कि मात्र एक वर्ष के भीतर प्रदेश को लगभग 7 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। इन प्रस्तावों से लाखों लोगों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे और सेवा क्षेत्र को नई पहचान मिलेगी।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ केयर कनेक्ट में अस्पतालों और हेल्थकेयर क्षेत्र में 11 बड़े प्रस्ताव सामने आए हैं। इनमें रायपुर का गित्री देवी गोयल मणिपाल हॉस्पिटल (500 बेड), नीरगंगा हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर (450 बेड), बॉम्बे हॉस्पिटल (300 बेड) और माँ पद्मावती इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (750 बेड) जैसे बड़े प्रोजेक्ट शामिल हैं। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में कुल मिलाकर 2,466 करोड़ रुपये से

अधिक का निवेश प्रस्तावित है, जिससे लगभग 6,000 नए रोजगार सृजित होंगे।

मेडिसिटी से बनेगा मेडिकल हब

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि नवा रायपुर में विकसित हो रहा मेडिसिटी छत्तीसगढ़ को राष्ट्रीय स्तर का बड़ा मेडिकल हब बनाएगा। प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों से भी यहां मरीज आते हैं। मेडिसिटी के निर्माण से स्वास्थ्य सेवाएं और मजबूत होंगी और विश्वस्तरीय सुपर स्पेशलिटी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ में फार्मा सेक्टर में भी निवेश की अपार संभावनाएं हैं। प्रदेश सरकार फार्मा हब तैयार कर रही है, जहां एक ही स्थान पर अनेक फार्मा इंडस्ट्री अपना संचालन करेंगी। इससे प्रदेश में दवा उद्योग को नई दिशा मिलेगी और सुपर स्पेशियलिटी अस्पतालों के लिए आवश्यक दवाओं की आसान आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

होटल और पर्यटन क्षेत्र में निवेश

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और जैव विविधता पर्यटन उद्योग के लिए अपार अवसर प्रस्तुत करती है। कार्यक्रम में होटल और पर्यटन क्षेत्र से भी 652 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। इनमें वेस्टिन होटल रायपुर (212.7 करोड़ रुपये), होटल जिंजर, इन्फेरियन होटल एंड रिसॉर्ट, अम्यूजोरामा अम्यूज़मेंट पार्क एंड होटल जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

पर्यटन को उद्योग का दर्जा

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है और इससे निवेशकों को विशेष लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री ने आह्वान किया कि होटल, रिसॉर्ट, होम स्टे और मनोरंजन उद्योग से जुड़े उद्यमी प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और प्रकृति का लाभ उठाकर पर्यटन को नई ऊँचाइयों तक ले जाएं।

निवेश प्रक्रिया की सरलता

मुख्यमंत्री साय ने निवेशकों को भरोसा दिलाते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में सिंगल विंडो 'वन क्लिक' सिस्टम लागू है, जिसके कारण किसी भी उद्यमी को एनओसी के लिए भटकना नहीं पड़ता। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि दिल्ली में आयोजित इन्वेस्टर्स समिट के बाद पालीमैटेक कंपनी को तीन माह से भी कम समय में भूमि आवंटन और सभी स्वीकृतियाँ प्रदान कर दी गईं और उन्होंने 1,100 करोड़ रुपये के प्रोजेक्ट पर कार्य आरंभ कर दिया।

नई तकनीक और एआई सेक्टर

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि छत्तीसगढ़ एआई क्रांति का भी स्वागत कर रहा है। नवा रायपुर में एआई डाटा सेंटर पार्क का निर्माण

किया जा रहा है, जो भविष्य में प्रदेश को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डाटा मैनेजमेंट का हब बनाएगा। यहां डाटा सेंटर से जुड़े उद्योगों के लिए निवेश की अपार संभावनाएं हैं।

पावर हब की ओर कदम

उन्होंने कहा कि विकसित भारत के निर्माण में ऊर्जा सबसे आवश्यक तत्व है। छत्तीसगढ़ देश का पावर हब बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। कोयला, खनिज और ऊर्जा उत्पादन में छत्तीसगढ़ की भूमिका पहले से ही महत्वपूर्ण रही है और आने वाले वर्षों में यह योगदान और भी बढ़ेगा।

कनेक्टिविटी और लोकेशन का लाभ

मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ की सेंट्रल इंडिया लोकेशन इसे विशेष बनाती है। कच्चे माल की प्रचुर उपलब्धता, रेल, सड़क और हवाई मार्ग की मजबूत कनेक्टिविटी तथा प्रशिक्षित मानव संसाधन इसे निवेश के लिए आदर्श गंतव्य बनाते हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में एयर कार्गो सेवा भी आरंभ हो चुकी है, जिससे व्यापार और तेज़ी से बढ़ेगा।

सेवा क्षेत्र की नई पहचान

मुख्यमंत्री ने जोर दिया कि अब छत्तीसगढ़ केवल स्टील, सीमेंट, पावर और एल्युमिनियम तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सेवा क्षेत्र से जुड़े उद्योगों की पहचान भी बनेगा। हेल्थकेयर, होटल, पर्यटन और एआई आधारित इंडस्ट्री आने वाले समय में प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नए आयाम देंगे।

कार्यक्रम में उद्योग मंत्री लखन लाल देवांगन ने कहा कि हेल्थ, पर्यटन के साथ सभी प्रकार के निवेश में सरकार सहूलियतें उपलब्ध कराएगी। नई उद्योग नीति से उद्योगपतियों का आकर्षण प्रदेश की ओर बढ़ा है। मुख्यमंत्री ने विभिन्न प्रदेशों के साथ ही विदेश जापान और दक्षिण कोरिया जैसे स्थानों पर भी इन्वेस्टर समिट में हिस्सा लिया है। प्रदेश में 5 से अधिक बार निवेशकों के साथ बैठक हुई है, इससे नए उद्योगों की स्थापना और रोजगार के अवसर सृजित हो रहे हैं। पिछले 10 महीनों में लगभग 7 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव मिल चुके है। हमने होटल एवं पर्यटन क्षेत्र को भी प्रोत्साहित करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देशन में अच्छे से अच्छा काम हो सके हम यह प्रयास कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि राजधानी रायपुर के ओमाया गार्डन में आयोजित छत्तीसगढ़ केयर कनेक्ट कार्यक्रम में हेल्थकेयर और होटल क्षेत्र की प्रतिष्ठित कंपनियों ने निवेश के बड़े प्रस्ताव पेश किए। कार्यक्रम में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए 11 बड़े अस्पताल समूहों ने कुल 2,466.77 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव दिए, जिनसे लगभग 6000 लोगों को रोजगार मिलेगा और प्रदेश में आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की नई ऊँचाइयाँ स्थापित होंगी।

कार्यक्रम में मुंबई स्थित बॉम्बे हॉस्पिटल ट्रस्ट ने 300 बेड सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के लिए 680.37 करोड़ का निवेश प्रस्तावित किया है, जिससे 500 रोजगार उपलब्ध होंगे। माँ पद्मावती इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज रायपुर 750 बेड क्षमता वाला मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल 340 करोड़ निवेश और 1,500 रोजगार अवसर प्राप्त होंगे। आरोग्यमृत वेलनेस एलएलपी रायपुर द्वारा इंटरनल वेलनेस ग्रोथ, हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर की स्थापना हेतु 300 करोड़ के निवेश और 1,000 रोजगार अवसरों के साथ प्रस्तावित किया गया है। फोर सीज़न हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर रायपुर 600 बेड क्षमता और 302 करोड़ के निवेश से 1,400 रोजगार सृजित करेगा। गित्री देवी गोयल मणिपाल हॉस्पिटल रायपुर में 500 बेड का 307 करोड़ का मल्टी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल प्रस्तावित है, जिसमें 100 लोगों को रोजगार मिलेगा।

नीरगंगा हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर रायपुर (वंदना ग्रुप) द्वारा 450 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल 205.23 करोड़ के निवेश और 302 रोजगार अवसरों के साथ प्रस्तावित किया गया है। मेमन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड रायपुर 150 बेड क्षमता वाले संजीवनी सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल में 101 करोड़ निवेश और 400 रोजगार अवसर लेकर आया है। मॉडर्न मेडिकल इंस्टिट्यूट रायपुर 150 बेड सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के रूप में 91.8 करोड़ के निवेश से 555 रोजगार उत्पन्न करेगा। श्रीराम संजीवनी कैंसर हॉस्पिटल बिलासपुर 100 बेड 70 करोड़ निवेश और 200 लोगों को रोजगार के साथ प्रस्तावित है।

केन्द्र और छत्तीसगढ़ सरकार बस्तर और समस्त नक्सल क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित हैं

31 मार्च 2026 के बाद नक्सलवादी बस्तर के विकास और यहाँ के लोगों के अधिकार को नहीं रोक पाएँगे

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह जगदलपुर में बस्तर दशहरा महोत्सव में शामिल हुए, किया संबोधित

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में आयोजित बस्तर दशहरा महोत्सव को संबोधित किया। इससे पहले अमित शाह ने प्रसिद्ध दंतेश्वरी मंदिर में दर्शन और पूजन किया। बस्तर दशहरा महोत्सवअवसर में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और उप मुख्यमंत्री डॉ. विजय शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अपने संबोधन में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि 75 दिनों तक चलने वाला विश्व का सबसे बड़ा और अनूठा बस्तर दशहरा मेला न केवल आदिवासी समाज, बस्तर, छत्तीसगढ़ या भारत बल्कि पूरे विश्व में सबसे बाद सांस्कृतिक महोत्सव है। शाह ने कहा कि आज माँ दंतेश्वरी के दर्शन-पूजन के दौरान उन्होंने प्रार्थना की कि वे हमारे सुरक्षा बलों को शक्ति दें ताकि वे 31 मार्च 2026 तक बस्तर क्षेत्र को लाल आतंक से मुक्त कर सकें। शाह ने कहा कि दिल्ली में कुछ लोग वर्षों तक यह भ्रांति फैलाते रहे कि नक्सलवाद का जन्म विकास की लड़ाई है, जबकि सच यह है कि बस्तर के विकास से वंचित रहने का मूल कारण नक्सलवाद ही है। उन्होंने कहा कि आज देश के हर गाँव में बिजली, पेयजल, सड़क, हर घर में शौचालय, पाँच लाख रुपए तक का स्वास्थ्य बीमा और पाँच किलो मुफ्त अनाज के साथ-साथ चावल को 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से खरीदने की व्यवस्था पहुँच चुकी है, लेकिन बस्तर प्रगति की इस दौड़ में पीछे रह गया है।

गृह मंत्री ने कहा कि वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से यह आश्वासन देना चाहते हैं कि 31 मार्च, 2026 के बाद नक्सलवादी न तो बस्तर के विकास और न ही बस्तर के लोगों के अधिकारों को रोक पाएंगे। शाह ने कहा कि बस्तर क्षेत्र के जो बच्चे भटक कर नक्सलवाद से जुड़ गए हैं, वे स्थानीय गांवों के ही हैं। शाह ने बस्तर के लोगों से अपील की कि वे भटके हुए इन बच्चों को हथियार छोड़ कर मुख्यधारा में शामिल होने की बात समझाएं, ताकि वे बस्तर के विकास में सहभागी बनें।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ शासन ने देश की सबसे बेहतर सरेंडर नीति बनाई है। पिछले एक महीने में ही 500 से अधिक लोग सरेंडर कर चुके हैं। उन्होंने नक्सलियों से अपील की कि वे सरेंडर कर दें। शाह ने कहा कि जिस गाँव में नक्सलवाद पूरी तरह खत्म हो जाएगा, वहाँ छत्तीसगढ़ शासन द्वारा गाँव के विकास के लिए 1 करोड़ रुपए दिए जाएँगे। शाह ने कहा कि नक्सलवाद से किसी का भला नहीं हुआ है और यह समस्या अब काफी हद तक कम हो चुकी है।

अमित शाह ने कहा कि कि केन्द्र सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार बस्तर सहित सभी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के विकास के लिए पूर्णतः समर्पित हैं और इसके लिए आकर्षक नीतियाँ बनाई गई हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी ने छत्तीसगढ़ के विकास के लिए पिछले 10 वर्षों में लगभग 4 लाख 40 हजार करोड़ रुपए की धनराशि प्रदान की है। छत्तीसगढ़ का विकास दिन-दूनी,रात-चौगुनी गति से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि उद्योग स्थापित हो रहे हैं, शिक्षा के संस्थान बन रहे हैं, और स्वास्थ्य संस्थानों का विकास हो रहा है। साथ ही हमारे लघु उद्योगों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि हमने बहुत मोहक आत्मसमर्पण नीति बनाई है। उन्होंने नक्सलियों से अपील की कि वे हथियार डाल दें। शाह ने साथ ही चेताया भी कि यदि हथियारों के जरिए बस्तर की शांति को भंग करने का प्रयास किया गया, तो हमारे सशस्त्र बल, सीआरपीएफ और छत्तीसगढ़ पुलिस मिलकर इसका करारा जवाब देंगी। उन्होंने कहा कि 31 मार्च 2026 की तिथि तय है, जब नक्सलवाद को इस देश से पूरी तरह समाप्त कर दिया जाएगा।

अमित शाह ने कहा कि इस बार बस्तर ओलंपिक में देशभर के आदिवासी भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि बस्तर का पंडुम उत्सव, खान-पान, वेश-भूषा, कला, और वाद्य यंत्र न केवल बस्तर में, बल्कि पूरे विश्व में आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी का यही संकल्प है कि हमारी संस्कृति, भाषा, खान-पान, वेश-भूषा और वाद्य यंत्र सदियों तक न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व के लिए संरक्षित रहें। इस संकल्प को पूरा करने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार और भारत सरकार कटिबद्ध हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि बस्तर में 1874 से आज तक मुरिया दरबार में सक्रिय भागीदारी, न्यायिक व्यवस्था, आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने का चिंतन और जनसंवाद की ऐतिहासिक परंपरा किसी वैश्विक धरोहर से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि मुरिया दरबार पूरे देश के लिए प्रेरणा और जानकारी का विषय है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि मोदी जी ने

हाल ही में छत्तीसगढ़ सहित पूरे देश की माताओं-बहनों को 395 वस्तुओं पर जीएसटी में भारी छूट देकर बड़ी राहत प्रदान की है। खाने-पीने की लगभग सभी चीजों को कर-मुक्त कर दिया गया है, और रोजमर्रा की उपयोग की वस्तुओं पर केवल पाँच प्रतिशत कर रखा गया है। उन्होंने कहा कि देश में इतनी बड़ी कर कटौती पहले कभी नहीं हुई, जितनी मोदी जी ने की है। इसके साथ ही, यदि हम स्वदेशी के संस्कारों को अपनाते हैं, तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व गति मिलेगी। शाह ने कहा कि बस्तर दशहरा महोत्सव में 300 से अधिक स्वदेशी कंपनियाँ हिस्सा ले रही हैं। उन्होंने कहा कि स्वदेशी वॉकथॉन स्वदेशी भावना को नई पहचान देने का एक प्रभावी माध्यम बन गया है। आज देशभर में आयोजित हो रहे स्वदेशी मेलों के माध्यम से स्वदेशी अभियान को और गति मिल रही है।

अमित शाह ने कहा कि श्रावण अमावस्या से अश्विन शुक्ल त्रयोदशी तक चलने वाला बस्तर का 75 दिनों का दशहरा हम सभी के लिए गौरव, पहचान और अभिमान का विषय है। उन्होंने कहा कि 14वीं शताब्दी से शुरू हुई रथ यात्रा ने इस पूरे क्षेत्र में सांस्कृतिक जागृति की शुरुआत की। शाह ने कहा कि माँ दंतेश्वरी की रथ यात्रा में 66 आदिवासी और कई गैर-आदिवासी समूह भाग लेते हैं। शाह ने कहा कि बस्तर दशहरा और मुरिया दरबार आदिवासियों को जोड़ने का कार्य करते हैं और पूरे बस्तर को एक सूत्र में पिरोते हैं।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि मोदी सरकार ने आदिवासियों के सम्मान में अनेक योजनाएँ शुरू की हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी ने पहली बार देश के सर्वोच्च पद पर आदिवासी समुदाय की बेटी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाकर गौरवपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जब महामहिम द्रौपदी मुर्मू जी विश्व के राष्ट्राध्यक्षों से मिलती हैं, तो न केवल आदिवासी समाज, बल्कि हम सभी का हृदय गर्व से भर जाता है। लोकतंत्र के सर्वोच्च पद पर ओडिशा के एक गरीब परिवार की बेटी का महामहिम के रूप में आसीन होना हम सभी के लिए गौरव का विषय है।

शाह ने कहा कि मोदी जी ने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती को जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया। उनकी जयंती को आदिवासी गौरव दिवस के रूप में स्थापित किया गया। बस्तर संभाग के सातों जिलों में नक्सलवाद छोड़कर सरेंडर करने वाले व्यक्तियों और नक्सली हिंसा में मारे गए लोगों के परिजनों के लिए 15,000 से अधिक प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत करने का कार्य भी प्रधानमंत्री मोदी जी ने किया है।

अमित शाह ने कहा कि नारायणपुर जिले के पंडी राम मंडावी और हेमचंद मांझी, तथा कांकेर के अजय कुमार मंडावी को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्होंने कहा कि बस्तर दशहरा महोत्सव के अवसर पर आज 'महतारी वंदन योजना' की 20वीं किस्त के रूप में 70 लाख छत्तीसगढ़ी माताओं को 607 करोड़ रुपए वितरित किए गए।

अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग करने का लें संकल्प

अमित शाह ने स्वदेशी जागरण मंच द्वारा आयोजित स्वदेशी मेला का जिक्र करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लंबे समय से स्वदेशी पर जोर दिया है। स्वदेशी जागरण मंच कई वर्षों से स्वदेशी को जन-आंदोलन के रूप मेंचला रहा है। अब मोदी जी ने सभी से आह्वान किया है कि प्रत्येक घर को यह संकल्प लेना है कि हम केवल अपने देश में बनी वस्तुओं का उपयोग करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यापारी को यह संकल्प लेना है कि उनकी दुकान या शॉपिंग मॉल में विदेशी वस्तुएँ उपलब्ध नहीं होंगी। श्री शाह ने कहा कि यदि 140 करोड़ की आबादी स्वदेशी के इस संकल्प को आत्मसात कर ले, तो भारत को विश्व की सर्वोच्च आर्थिक शक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता।

मुरिया दरबार में अमित शाह ने मांझी-चालकी से किया सीधा संवाद

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय बस्तर दशहरा पर्व के अवसर पर जगदलपुर के सिरहासार भवन में आयोजित मुरिया दरबार में शामिल हुए। बस्तर की आराध्य देवी मां दंतेश्वरी के चित्र पर दीप प्रज्वलित करने के पश्चात केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मांझी-चालकी से सीधा संवाद करते हुए बस्तर से माओवाद को समाप्त करने में सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि माओवाद से जुड़कर हथियार उठा चुके बच्चों को समझाएं कि वे मुख्यधारा में लौटें और शासन की योजनाओं का लाभ लें।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बस्तर के विकास और नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए दृढ़संकल्पित हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मांझी-चालकी से संवाद करते हुए कहा कि मार्च 2026 तक बस्तर को नक्सलवाद से मुक्त कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि बस्तर के युवा डॉक्टर, इंजीनियर, डिप्टी कलेक्टर और कलेक्टर बनकर पूरे

छत्तीसगढ़ की सेवा करें। यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि युवा नक्सलवाद से न जुड़ें और जो जुड़ चुके हैं, वे आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौटें। जहां-जहां नक्सलवाद समाप्त हुआ है, वहां छत्तीसगढ़ सरकार तेजी से विकास कार्य कर रही है और लोगों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित कर रही है।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने मुरिया दरबार में मांझी-चालकी को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार बस्तर दशहरा पर्व को और भव्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। बस्तर दशहरा के लिए दी जाने वाली राशि 25 लाख रुपये से बढ़ाकर 50 लाख रुपये की जा रही है। साथ ही बस्तर दशहरा पर्व के परंपरागत स्थलों जिया डेरा, माडिया सराय इत्यादि के विकास और निर्माण कार्य भी सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और अन्य अतिथियों का बस्तर दशहरा समिति के परंपरागत सदस्य मांझी-चालकी, मेम्बर-मेम्बरिन और नाईक-पाईक ने पारंपरिक पगड़ी एवं माला पहनाकर आत्मीय स्वागत किया।

प्रकृति, उद्योग और नेतृत्व मोहन यादव का दृष्टिकोण

विकास केवल आर्थिक आंकड़ों या बड़े उद्योगपतियों तक सीमित नहीं है। यह प्रकृति, संस्कृति और सामाजिक जिम्मेदारी के संतुलन से ही स्थायी होता है। प्रकृति, उद्योग और विकास—तीनों का सामंजस्य जब सामने आता है, तो दृष्टि का दायरा व्यापक और प्रेरक बन जाता है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के असम प्रवास ने यही दृष्टि स्पष्ट रूप से पेश की। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की वन्यजीव संपदा और असम के चाय बागानों की मेहनत और परिश्रम की कहानी ने एक बार फिर यह याद दिलाया कि विकास केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, पारिस्थितिक और सामाजिक रूप से संतुलित होना चाहिए।

इस भ्रमण ने न केवल वन्यजीव संरक्षण और पर्यटन की दिशा में नए अवसरों को उजागर किया, बल्कि मध्यप्रदेश-असम सहयोग और उद्यमशीलता के क्षेत्र में भी विश्वास और साझेदारी को मजबूत करने का संकेत दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्थानीय किसानों और उद्यमियों से संवाद कर यह संदेश दिया कि विकास के मार्ग पर उद्योग और प्रकृति दोनों का सम्मान आवश्यक है।

यह यात्रा, वन्यजीवों से लेकर उद्यमियों तक, प्रकृति, परिश्रम और नवाचार के सामंजस्य का जीवंत उदाहरण है। इसे पढ़ते हुए पाठक महसूस करेंगे कि कैसे राजनीतिक नेतृत्व और उद्यमशीलता मिलकर आत्मनिर्भर और समृद्ध भारत के सपने को साकार करने में योगदान दे सकते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अपने असम प्रवास के दौरान रविवार को विश्व प्रसिद्ध काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और स्थानीय चाय बागानों का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने चाय उत्पादन की प्रक्रिया का अवलोकन किया और स्थानीय किसानों एवं श्रमिक बहनों के साथ आत्मीय संवाद भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चाय उद्योग असम की पहचान और अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि असम और मध्यप्रदेश के बीच व्यापार-उद्योग, ईको-टूरिज्म और वन्यजीव पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग और साझेदारी बढ़ाने के लिए विशेष पहल की जाएगी।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में मुख्यमंत्री ने वन्यजीव संरक्षण और प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन किया। उन्होंने हाथियों को गन्ना खिलाकर दुलार किया और वन्यजीव संरक्षण में उपयोग हो रहे नवाचारों की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर उन्होंने अजगर को उसके प्राकृतिक आवास में छोड़कर संरक्षण की मिसाल पेश की।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, जो यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित है, एक सींग वाले गैंडे और पूर्वी हिमालयी जैव विविधता का प्रमुख केंद्र है। यहाँ हाथी, जंगली भैंस, दलदली हिरण और विभिन्न पक्षियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। यह उद्यान न केवल वन्य जीवों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि पर्यटन और शिक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मध्यप्रदेश को विकास की दृष्टि से अग्रणी राज्य बनाने में उद्योग जगत की भूमिका महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार और नागरिकों के सहयोग से उद्योगों के प्रयास आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में सहायक होंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यदक्षता, नवाचार और सरल नीतियों के संदर्भ में भी उद्यमियों को प्रोत्साहित किया।

असम प्रवास के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को होटल कोर्टयार्ड मैरियट में आयोजित 'कैप्टन्स ऑफ इंडस्ट्री' कार्यक्रम में प्रदेश के 52 उद्यमियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में उद्योग, व्यापार, रियल एस्टेट और सेवा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले लीडरों को सम्मानित किया गया।

डॉ. यादव ने कहा कि उद्योग जगत के बिना राष्ट्र का विकास अधूरा है। उन्होंने उद्यमियों को आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में योगदान देने और रोजगार सृजन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यदक्षता, नवाचार और सरल नीतियों के संदर्भ में भी उन्होंने उद्यमियों की सराहना की।

डॉ. मोहन यादव की ये गतिविधियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि राजनीति केवल प्रशासन या कानून तक सीमित नहीं, बल्कि समाज, उद्योग और प्रकृति के बीच संतुलन बनाने का भी माध्यम है। असम में वन्यजीव संरक्षण और चाय उद्योग की दिशा में लिया गया दृष्टिकोण, और मध्यप्रदेश में उद्योग जगत के प्रोत्साहन का संदेश—दोनों मिलकर यही संकेत देते हैं कि विकास की कल्पना तभी पूरी होती है जब नेतृत्व, नवाचार और समाज की आवश्यकता एक साथ जुड़ें।

विन्ध्य क्षेत्र में स्किन डोनेशन का पहला सफल प्रयास

विन्ध्य क्षेत्र में मानवता और चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ गया है। श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय के संजय गांधी अस्पताल में हाल ही में पहली बार स्किन डोनेशन का सफल आयोजन किया गया। यह उपलब्धि न केवल क्षेत्रीय स्वास्थ्य सुविधाओं में एक मील का पत्थर साबित हुआ है, बल्कि समाज में अंगदान और मानवता की भावना को भी मजबूत करेगा।

इस ऐतिहासिक आयोजन में दिवंगत शिवेन्द्र कुमार पाण्डेय के परिजनों ने उनके शरीर से स्किन दान करने की पुण्यप्राप्ति की पहल की। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मई माह में स्किन बैंक के उद्घाटन अवसर पर लोगों से अंगदान की अपील की थी। इस अपील का सकारात्मक असर अब सामने आया है और यह पहल विन्ध्य क्षेत्र में एक उदाहरण बन गई है।

शिवेन्द्र कुमार पाण्डेय के निधन के बाद उनकी पत्नी प्रतिभा पाण्डेय, जो महिला एवं बाल विकास विभाग में जिला कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं, ने अपने जीवनसाथी की इच्छा का सम्मान करते हुए उनकी स्किन दान करने का निर्णय लिया। यह निर्णय न केवल उनके परिवार की संवेदनशीलता को दर्शाता है, बल्कि समाज में जिम्मेदार नागरिकता की एक मिसाल भी पेश करता है।

> **मृत्यु के चार से छह घंटे के भीतर स्किन हार्वेस्टिंग की जाती है। इस प्रक्रिया के बाद शरीर को तुरंत परिजनों को सौंप दिया जाता है, जिससे अंतिम संस्कार और पारिवारिक संस्कारों में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती। हार्वेस्ट की गई स्किन को माइक्रोबायोलॉजिकल और बायोकेमिकल परीक्षण के बाद प्रोसेस किया जाएगा।**

श्यामशाह चिकित्सा महाविद्यालय के प्लास्टिक सर्जरी विभाग की टीम ने इस महत्वपूर्ण कार्य को सफलता पूर्वक संपन्न किया। डॉ सौरभ सक्सेना और डॉ अजय पाठक के नेतृत्व में मृतक की स्किन को सावधानीपूर्वक हार्वेस्ट किया गया और स्किन बैंक में सुरक्षित रखा गया। डॉ सक्सेना के अनुसार, मृत्यु के चार से छह घंटे के भीतर स्किन हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया पूरी की जाती है, ताकि इसे माइक्रोबायोलॉजिकल और बायोकेमिकल परीक्षणों के बाद प्रोसेस करके जले हुए या गंभीर चोटग्रस्त मरीजों में लगाया जा सके।

डॉ सौरभ सक्सेना ने बताया कि मृत्यु के चार से छह घंटे के भीतर स्किन हार्वेस्टिंग की जाती है। इस प्रक्रिया के बाद शरीर को तुरंत परिजनों को सौंप दिया जाता है, जिससे अंतिम संस्कार और पारिवारिक संस्कारों में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती। हार्वेस्ट की गई स्किन को माइक्रोबायोलॉजिकल और बायोकेमिकल परीक्षण के बाद प्रोसेस किया जाएगा। इसके पश्चात यह जरूरतमंद जले हुए मरीजों और अन्य गंभीर रोगियों में प्रत्यारोपण के लिए उपयोग की जाएगी।

महाविद्यालय के डीन डॉ सुनील अग्रवाल के मार्गदर्शन में स्किन और ऑर्गन डोनेशन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए नियमित कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल चिकित्सकीय दृष्टि से मदद करना ही नहीं, बल्कि समाज में अंगदान की सामाजिक स्वीकार्यता को बढ़ाना भी है।

यह पहल न केवल विन्ध्य क्षेत्र के लिए, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ और आसपास के राज्यों के लिए प्रेरक संदेश है। यह दिखाता है कि मृत्यु भी जीवन को बचाने का अवसर बन सकती है। शिवेन्द्र कुमार पाण्डेय और उनकी पत्नी प्रतिभा पाण्डेय का यह कदम समाज में जागरूकता फैलाने के साथ-साथ जरूरतमंद मरीजों के लिए आशा की किरण भी बन गया है।

महाशक्ति के सामने औरत की जीत

अंधेरे में जलती रही उम्मीद की लौ और ट्रंप का सपना धुआं बन गया

2025 का नोबेल पीस प्राइज इस बार किसी बड़े देश या नामी चेहरे को नहीं, बल्कि वेनेजुएला की एक छिपी हुई महिला—मारिया कोरीना माचादो—को मिला है। वही मारिया, जो आज अपने ही देश में गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत जीवन जी रही हैं। लेकिन उनकी हिम्मत ने उस अंधेरे में भी लोकतंत्र की लौ को जला रखा, जहां डर और तानाशाही ने हर आवाज को दबा रखा था।

मारिया, पेशे से इंजीनियर, लेकिन दिल से इंसानियत की पैरोकार, कराकस की गलियों से लेकर अंतरराष्ट्रीय मंचों तक अपनी आवाज उठाती रही हैं। उन्होंने बच्चों की शिक्षा के लिए फाउंडेशन बनाया, निष्पक्ष चुनाव की मुहिम चलाई, और जेल, धमकियों और निर्वासन की भयावहता के बावजूद कभी झुकी नहीं। उनके साहस ने साबित कर दिया कि लोकतंत्र सिर्फ संसदों या चुनावों तक सीमित नहीं, यह हर नागरिक की हिम्मत और जज़्बे में भी बसा है।

इस पुरस्कार ने दुनिया को याद दिला दिया कि शांति और न्याय की कीमत सिर्फ राजनीति या प्रचार नहीं, बल्कि व्यक्तिगत साहस और संघर्ष है। नोबेल कमेटी के अध्यक्ष ने कहा, 'जब पूरी दुनिया में लोकतंत्र कमजोर हो रहा है, ऐसे में मारिया जैसी महिलाएं ही हमारी उम्मीद हैं।' यह बयान एक तरह की चेतावनी भी था—कि डर और तानाशाही की दीवारें कितनी भी ऊँची हों, सच और हिम्मत की रोशनी हर अंधकार को चीर सकती है।

दूसरी ओर, वॉशिंगटन में ट्रंप की उम्मीदों के बौछारें पानी में गिर गईं। व्हाइट हाउस ने बयान जारी किया—'नोबेल कमेटी ने शांति से ज्यादा राजनीति को चुना है।' ट्रंप ने नोबेल के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी—डिप्लोमेसी, मीडिया कैंपेन, और ट्विटर पर भावनात्मक अपीलें। उनका सपना था कि यह पुरस्कार उन्हें बराक ओबामा से 'ऊपर' खड़ा करेगा—जिसे वह हमेशा 'अनडिज़र्विंग विनर' कहते रहे। लेकिन नोबेल कमेटी ने साफ कर दिया कि सम्मान खरीदा नहीं जाता, अर्जित किया जाता है।

ट्रंप की प्रतिक्रिया में एक कटु हास्य था। उनके समर्थक ट्वीट कर रहे थे, प्रेस कांफ्रेंस में उनकी भौंं उचकी हुई थी, और सोशल मीडिया पर उनके 'इनविजिबल इफेक्ट' के तमाशे बन रहे थे। दुनिया देख रही थी कि मंच पर बैठे व्यक्ति की तालियां अब किसी और के लिए गूंज रही थीं।

मारिया माचादो आज भी छिपकर जी रही हैं। लेकिन उनका साहस अब पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा बन चुका है। कराकस की संकरी गलियों में लुके इस साहसी चेहरे ने साबित कर दिया कि एक अकेली महिला भी तानाशाही के डर को चुनौती दे सकती है और लोकतंत्र की लौ को जिंदा रख सकती है।

यह कहानी केवल पुरस्कार की नहीं है। यह कहानी उस अजेय जज़्बे की है, जिसने अंधेरे में भी उम्मीद की लौ जलाए रखी। और ट्रंप? वह अब भी मंच पर हैं, लेकिन इस बार उनके सपनों का महल धुआं बन चुका है। तालियां इस बार किसी और के लिए गूंज रही हैं—उस औरत के लिए, जिसने साबित कर दिया कि डर, तानाशाही और सत्ता के बवंडर में भी मानवता और हिम्मत की जीत अवश्य होती है।

एक मुलाक़ात, अनगिनत अवसर

आज का व्यावसायिक परिदृश्य तेज़ी से बदल रहा है। तकनीक, कनेक्टिविटी और सूचना के इस युग में ज्ञान का मूल्य पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। लेकिन ज्ञान अपने आप में केवल जानकारी है। सच्ची सफलता तभी मिलती है जब आप उस ज्ञान को लागू करना सीखें। यही कारण है कि हम कहते हैं – "Learn के अंदर Earn है।"

इसका अर्थ केवल शाब्दिक नहीं है। इसका मतलब यह है कि सीखने का असली मूल्य तभी प्राप्त होता है जब आप उसे अपनी वास्तविक जीवन परिस्थितियों और बिज़नेस में लागू करें। यानी, सीखना और Apply करना दो अलग-अलग चीज़ें हैं। सीखना आत्म-सुधार का आधार है, लेकिन Apply करना ही वास्तविक सफलता की दिशा तय करता है।

काम करना और बिज़नेस पर काम करना- फर्क समझना ज़रूरी

हर व्यापारी या उद्यमी अक्सर अपने रोज़मर्रा के काम में उलझ जाता है। कई लोग दिन भर ग्राहकों की सेवा करते हैं, प्रोडक्ट तैयार करते हैं, बिक्री बढ़ाने की कोशिश करते हैं और फिर भी लगता है कि सफलता दूर है। इसका कारण है-काम करने और बिज़नेस पर काम करने में अंतर समझने की कमी।

काम करना- इसका मतलब है अपने रोज़मर्रा के ऑपरेशन्स को संभालना। ग्राहक सेवा, उत्पादन, बिक्री, इन्वेंटरी, सप्लाई चेन - ये सब रोज़मर्रा के काम हैं।

बिज़नेस पर काम करना -इसका मतलब है अपने बिज़नेस की रणनीति पर ध्यान देना। इसे स्केल करना, नए मार्केट में प्रवेश करना, नेटवर्क बनाना, टीम को प्रशिक्षित करना, और अपने टारगेट तय करना शामिल है।

सफल उद्यमी वही होता है जो केवल काम नहीं करता, बल्कि बिज़नेस पर काम करता है। उसे पता होता है कि ऑपरेशन्स को सुचारू रखना जरूरी है, लेकिन बिज़नेस बढ़ाने के लिए सही दिशा में सोचना और योजना बनाना उतना ही आवश्यक है।

> “बिज़नेस सिर्फ कमाई का माध्यम नहीं, बल्कि संतुष्टि और खुशी का जरिया भी होना चाहिए। आपका काम और आपके प्रोडक्ट से ग्राहक को खुशी मिले, और आपको अपने काम से संतोष मिले। यही दीर्घकालिक सफलता की नींव है।”

आपका बिज़नेस रोडमैप

हर बिज़नेस को एक Yearly Sales Target की जरूरत होती है। यह सिर्फ एक संख्या तय करना नहीं है, बल्कि यह आपके व्यवसाय की दिशा और महत्वाकांक्षा को परिभाषित करता है। टारगेट न होने पर बिज़नेस तैरता रहता है, लेकिन स्पष्ट लक्ष्य होने पर हर रणनीति और कार्य उस लक्ष्य की ओर केन्द्रित होता है।

याद रखें, अधिकतर सेल्स Referral से ही आती है। इसका मतलब है कि आपके ग्राहक और नेटवर्क के लोग आपके बिज़नेस के प्रचारक बन सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपको केवल अच्छा प्रोडक्ट देना पर्याप्त नहीं है ङ्क आपको खुद को और अपने बिज़नेस को सही तरीके से पेश करना सीखना होगा।

5P है सफलता की कुंजी

सालाना टारगेट हासिल करने और बिज़नेस को सफल बनाने के लिए पाँच क्क्का ध्यान रखना जरूरी है-

Purpose (उद्देश्य)

आपका बिज़नेस क्यों है? आपका मकसद केवल मुनाफ़ा कमाना नहीं होना चाहिए। जब उद्देश्य स्पष्ट होता है, तो आपके निर्णय, रणनीति और प्रयास सही दिशा में केंद्रित रहते हैं।

Pleasure (सुख/संतुष्टि)

बिज़नेस सिर्फ कमाई का माध्यम नहीं, बल्कि संतुष्टि और खुशी का जरिया भी होना चाहिए। आपका काम और आपके प्रोडक्ट से ग्राहक को खुशी मिले, और आपको अपने काम से संतोष मिले। यही दीर्घकालिक सफलता की नींव है।

Perform (प्रदर्शन)

उत्कृष्टता और परिणाम हमेशा ध्यान का केंद्र होना चाहिए। केवल प्रयास करना पर्याप्त नहीं, प्रदर्शन और परिणाम पर फोकस करें। ग्राहकों को आपके काम की गुणवत्ता का अनुभव होना चाहिए।

Patience (धैर्य)

सफलता रातोंरात नहीं मिलती। बिज़नेस में धैर्य रखना उतना ही आवश्यक है जितना

BNI

कि मेहनत करना। लंबी अवधि के लिए निरंतर प्रयास और रणनीति ही स्थायी सफलता सुनिश्चित करते हैं।

Profitability (लाभप्रदता)

आखिरकार, हर बिज़नेस का उद्देश्य लाभ और सतत विकास है। लेकिन ध्यान रहे, Profitability तभी संभव है जब Visibility और Credibility हों।

लाभ की आधारशिला

Profitability को केवल प्रोडक्ट या सेवा की गुणवत्ता पर निर्भर नहीं किया जा सकता। इसे बनाने के लिए दो महत्वपूर्ण घटक हैं-

Visibility (दृश्यता)

लोग आपको, आपके प्रोडक्ट और आपके बिज़नेस को पहचानें। आपकी मौजूदगी और पहुँच जितनी अधिक होगी, संभावना उतनी ही अधिक कि लोग आपके साथ काम करना चाहेंगे।

Credibility (विश्वसनीयता)

लोग तभी आपके बिज़नेस में निवेश करेंगे या आपको रेफर करेंगे जब आप भरोसेमंद साबित होंगे। विश्वसनीयता आपके अनुभव, उपलब्धियों, और नेटवर्क से आती है।

Visibility और Credibility को बनाने का सबसे आसान तरीका है 'एक मुलाक़ात'।

सफलता की सबसे सरल और प्रभावी रणनीति

- आपके नेटवर्क, आपकी उपलब्धियाँ और आपकी स्किल तभी मूल्यवान बनती हैं जब आप लोगों से मुलाक़ात करते हैं।
- लोगों से मिलें – अपने संपर्क बढ़ाएँ, नए संबंध बनाएँ। हर नया व्यक्ति आपके बिज़नेस के लिए एक संभावित सहयोगी, ग्राहक या रेफ़रल हो सकता है।
- अपने बिज़नेस के बारे में बताएं – अपने प्रोडक्ट, सर्विस और स्क्र साझा करें। लोगों को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं।
- अपना Goal और उपलब्धियां शेयर करें – लोग आपकी क्षमता और विश्वास को तभी स्वीकार करेंगे जब उन्हें आपके लक्ष्यों और उपलब्धियों की जानकारी होगी।
- अपने इंट्रेस्ट, स्किल और नेटवर्क साझा करें – ताकि लोग आपके लिए एसेट बन सकें। एक अच्छी मुलाक़ात से सिर्फ़ बिक्री नहीं होती, बल्कि आपके नेटवर्क का विस्तार और आपकी विश्वसनीयता भी बढ़ती है।
- हर मुलाक़ात एक अवसर है – अवसर नए कनेक्शन, सहयोग और भविष्य की बिक्री के लिए।

नेटवर्किंग का महत्व

आज का बिज़नेस नेटवर्किंग का युग है। अकेले प्रयास सीमित हैं, लेकिन नेटवर्क के माध्यम से आपका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। एक मजबूत नेटवर्क के फायदे हैं-

- रेफ़रल और नई बिक्री के अवसर।
- बिज़नेस साझेदार और सहयोगी।
- विशेषज्ञता और सलाह तक पहुँच।
- आपके ब्रांड और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का विकास।

लेकिन नेटवर्क केवल संपर्कों का समूह नहीं है। यह विश्वास, साझा उद्देश्य और मूल्य आधारित संबंध है। जब आप लोगों से मिलते हैं, उन्हें

अपने विज़न और उद्देश्यों के बारे में बताते हैं, तो आप केवल संपर्क नहीं बना रहे हैं – आप अपने बिज़नेस के लिए एसेट बना रहे हैं।

Application Mindset

सफल उद्यमी केवल सीखने वाले नहीं होते। वे सीखते हैं और तुरंत लागू करते हैं। यही Application Mindset है।

किसी नई रणनीति को सीखना पर्याप्त नहीं है।

मार्केटिंग, सेल्स, प्रोडक्ट डेवेलपमेंट या टीम मैनेजमेंट की जानकारी को तुरंत अपने बिज़नेस में लागू करें।

सीखने और लागू करने का चक्र निरंतर चलता रहे।

याद रखें, ज्ञान का वास्तविक मूल्य उसके प्रयोग में है। Learn के अंदर Earn है.

सफलता के चरण

- सीखें और Apply करें – Learn के अंदर Earn है।
  काम और बिज़नेस पर काम का अंतर समझें।
  सालाना सेल्स टारगेट तय करें।
- 5P को अपनाएँ – Purpose, Pleasure, Perform, Patience, Profitability।
- Visibility और Credibility बनाएं।
- हर मुलाक़ात को अवसर समझें।
- नेटवर्क का निर्माण और उसका सही उपयोग करें।
- Application Mindset को जीवन शैली बनाएं।

इन सिद्धांतों का पालन करके कोई भी उद्यमी अपने बिज़नेस को स्थायी सफलता की दिशा में ले जा सकता है। याद रखिए, केवल मेहनत करना पर्याप्त नहीं है – सही दिशा, सही नेटवर्क, सही दृष्टिकोण और निरंतर प्रयास ही आपको सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाएंगे।

आज का बिज़नेस सिर्फ़ प्रतिस्पर्धा का नहीं, बल्कि ज्ञान और उसकी क्रियान्वयन क्षमता का भी मैदान है। Learn के अंदर Earn है यही मूल मंत्र है। अपने बिज़नेस के लिए टारगेट बनाएं, 5P अपनाएं, Visibility और Credibility बनाएँ, और हर मुलाक़ात को नए अवसर के रूप में देखें।

अंततः, आपका नेटवर्क और आपकी विश्वसनीयता ही आपके बिज़नेस की सबसे बड़ी पूँजी हैं। और यही पूँजी आपको स्थायी सफलता, मुनाफ़ा और संतोष दोनों देती है।

कफ सिरप का कहर!

जब सिस्टम सो गया, और मासूम मर गए

'औषधि'— जब कोई डॉक्टर पर्ची पर दवा लिखता है —

मरीज बिना शंका उसे ग्रहण करता है।

क्योंकि उसे विश्वास होता है — 'यह दवा जीवन देगी, मौत नहीं।'

पर जब वही दवा ज़हर बन जाए,

तो सवाल उठता है — आखिर दोषी कौन है?

वह निर्माता जिसने मानकों को धता बताया,

वह निरीक्षक जिसने आँखें मूँद लीं,

या वह पूरा सिस्टम — जो सालों से नींद में है?

अक्टूबर 2025 की वह रात सिर्फ़ तमिलनाडु के 17 मासूमों की नहीं थी —

वह भारत के औषधि नियमन की सामूहिक नींद का शोकगीत थी। जिसने बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया — भारत की औषधि सुरक्षा व्यवस्था आखिर कितनी सुरक्षित है?

हादसा नहीं, एक पैटर्न है

भारत में हर ऐसी त्रासदी के बाद एक परिचित रूटीन शुरू होता है —

'जांच समिति गठित, रिपोर्ट लंबित, सुधार स्थगित।'

> तमिलनाडु के वे 17 बच्चे केवल एक राज्य की असफलता का प्रतीक नहीं हैं — वे भारत की उस नियामक नींद के शिकार हैं, जो हर चेतावनी के बाद भी नहीं टूटती। हम दवाओं में 'प्राण' खोज रहे हैं, पर सिस्टम में 'संवेदना' मर चुकी है।

2019 में गाम्बिया में भारतीय कफ सिरप से बच्चों की मौत,

2023 में उज़्बेकिस्तान में यही कहानी,

और अब 2025 में फिर वही सिरप, वही आँसू, वही खामोशी।

यह कोई दुर्घटना नहीं — यह एक संरचनात्मक अपराध है।

यह पहली बार नहीं हुआ। बीते एक दशक में भारत से बनी कई दवाइयों पर अफ्रीका, उज़्बेकिस्तान और गाम्बिया जैसे देशों ने प्रतिबंध लगाए हैं। हर बार जांच हुई, रिपोर्ट आई, समिति बनी — लेकिन सुधार कभी नहीं हुए।

तमिलनाडु की यह त्रासदी उसी ढहते ढांचे का परिणाम है, जहाँ नियामक संस्थाएँ कागज़ पर हैं, ज़मीन पर नहीं।

आंकड़े जो सिहराते हैं

भारत की सर्वोच्च औषधि नियामक संस्था सीडीएससीओ (CDSCO) के लगभग

40 प्रतिशत पद खाली हैं।

देश के 750 ज़िलों में मात्र 504 निरीक्षक काम कर रहे हैं — यानी एक निरीक्षक औसतन डेढ़ ज़िले की जिम्मेदारी संभाल रहा है।

केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष केवल 49 पद भरे, जबकि 200 से ज़्यादा खाली हैं।

सोचिए — इतने विशाल देश में दवा निरीक्षण की जिम्मेदारी कितने थके हुए, सीमित और असहाय लोगों पर है!

नेतृत्वहीन और निष्क्रिय

तमिलनाडु में जून 2025 से औषधि नियंत्रण प्रशासन मुखियाविहीन है।

365 दवा निर्माण इकाइयों, हजारों दवा दुकानों और रक्त बैंकों की देखरेख करने वाली यह संस्था बिना कप्तान की नाव बन चुकी है।

सहायक निदेशक के 25 पदों में से कई खाली हैं, और 10 औषधि निरीक्षक पद भी रिक्त पड़े हैं।

लालफीताशाही, पदोन्नति में देरी और राजनीतिक उदासीनता ने इसे जड़ बना दिया है।

जो 'कागज़ पर' काम करती हैं

भारत की राज्य स्तरीय दवा परीक्षण प्रयोगशालाओं की हालत भी शर्मनाक है।

उत्तराखंड की प्रयोगशाला, जिसकी क्षमता 750 नमूनों प्रति वर्ष की है, उसने 4 वर्षों में केवल 226 नमूनों की जाँच की।

यानी अधिकांश दवाएँ बाज़ार में बिना परीक्षण पहुँच जाती हैं — और फिर किसी सिरप के साथ 17 मासूमों की जान चली जाती है।

भ्रष्टाचार और लालफीताशाही- जड़ों में जहर

कानूनी शोधकर्ता सुमति चंद्रशेखरन और अग्निहोत्री की 2019 की रिपोर्ट ने पहले ही चेताया था —

'भारत में औषधि नियमन राजनीतिक प्रभाव, भ्रष्टाचार और संरचनात्मक कमी से जकड़ा हुआ है।'

हर साल कुछ निरीक्षकों का निलंबन होता है, कुछ की रहस्यमय मौतें होती हैं — पर सिस्टम वैसा का वैसा।

जवाबदेही नीचे से ऊपर तक गायब है।

मरीज नहीं, आंकड़े बचाए जा रहे हैं

दवा सुरक्षा का अर्थ केवल लाइसेंस देना नहीं है, बल्कि लाइसेंस के बाद की निगरानी भी है।

लेकिन जब निरीक्षण वर्ष में एक बार भी न हो, जब नमूने महीनों तक लैब में धूल खाते रहें, तो 'सुरक्षा' शब्द सिर्फ़ रिपोर्टों में रह जाता है, ज़मीनी हकीकत में नहीं।

साख पर भी असर

भारत 'दुनिया की फार्मेसी' कहा जाता है।

लेकिन जब गाम्बिया, उज्बेकिस्तान, नाइजीरिया जैसे देश भारतीय दवाओं पर प्रतिबंध लगाते हैं, तो यह केवल एक व्यापारिक झटका नहीं होता, बल्कि हमारी वैश्विक साख पर करारा प्रहार होता है।

अब सवाल यह नहीं कि गलती कहाँ हुई — बल्कि यह कि सुधार कब होगा?

हमारे देश में स्वास्थ्य से जुड़ी त्रासदियाँ अक्सर 'भूल जाने' की नीति पर समाप्त हो जाती हैं।

कफ सिरप से 17 बच्चों की मौत भी शायद उसी दिशा में बढ़ रही है — जहाँ फाइलें बंद हो जाती हैं, लेकिन आँखें नहीं खुलतीं।

तमिलनाडु के वे 17 बच्चे केवल एक राज्य की असफलता का प्रतीक नहीं हैं —

वे भारत की उस नियामक नींद के शिकार हैं, जो हर चेतावनी के बाद भी नहीं टूटती।

हम दवाओं में 'प्राण' खोज रहे हैं, पर सिस्टम में 'संवेदना' मर चुकी है।

अब वक्त आ गया है कि हम दवा उद्योग को सिर्फ़ व्यवसाय नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य की नैतिक जिम्मेदारी के रूप में देखें।

क्योंकि जब नियमन सोता है — तब दवा ज़हर बन जाती है।

...और कितने मौत के सिरप

जिस कंपनी का कफ सिरप 'कोल्ड्रिफ' पीकर बच्चों की मौत हुई है, सरकार ने तुरंत प्रभाव से उसे और कंपनी की अन्य 19 दवाओं को प्रतिबंधित कर दिया है। यह सवाल अभी सामने है कि न जाने कितनी कंपनियां अब भी कफ सिरप बनाने में डीईजी का इस्तेमाल कर रही हैं? यदि सरकार की एजेंसियां गंभीर होकर ऐसी कंपनियों की दवाओं का निरीक्षण करेंगी, तो हम त्रासदियों से बच सकेंगे! दरअसल डीईजी मीठे स्वाद वाला, रंगहीन, गंधहीन, तरल पदार्थ होता है। इसका उपयोग औद्योगिक सॉल्वेंट के तौर पर किया जाता है। दवाओं में इसके इस्तेमाल की भारत में भी सख्त मनाही है। यह पेंट, स्याही और कुछ प्लास्टिक के निर्माण में इस्तेमाल किया जाता है। दवा में कंपनियां मुनाफे के लिए प्रोपीलीन ग्लाइकॉल के साथ मिलावट के तौर पर डीईजी का इस्तेमाल करती हैं। प्रोपीलीन सुरक्षित है, लेकिन काफी महंगा है। डीईजी गुर्दे, यकृत, तंत्रिका तंत्र को गंभीर नुकसान पहुंचाता है। बच्चों में इसके शुरुआती लक्षण ये हैं कि उन्हें उल्टी, पेट दर्द और कम पेशाब की शिकायत होने लगती है। अंततः गुर्दे फेल हो जाते हैं और मौत हो जाती है।

बिहार की राजनीति में एक युग का अंत या नई चाल की शुरुआत?

भाजपा के लिए भी नीतीश अब 'एसेट' नहीं, बल्कि 'लायबिलिटी' बन चुके हैं। नीतीश को साथ रखो तो वोट नहीं मिलते, छोड़ो तो दलित-पिछड़ा समीकरण बिगड़ जाता है। यानी भाजपा अब उस स्थिति में है – 'साथ दौड़े तो हारे, अकेले दौड़े तो भी हारे।'

कभी बिहार की राजनीति के सबसे संयमी, सबसे संतुलित और सबसे 'सिस्टमेटिक' नेता कहे जाने वाले नीतीश कुमार आज खुद अपने बनाए सिस्टम के नीचे दबते नज़र आ रहे हैं।

उनकी राजनीति एक इंजीनियर की तरह शुरू हुई थी — तार जोड़े, सर्किट बनाए, करंट दिया — और एक दिन वही सर्किट ओवरलोड होकर फट गया।

2025 का बिहार चुनाव अब सिर्फ एक चुनाव नहीं है, बल्कि नीतीश युग के अंत और एक नए समीकरण के आरंभ की पटकथा बन चुका है।

नौ बार मुख्यमंत्री, पर अब कोई भरोसे का चेहरा नहीं

नीतीश कुमार नौ बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे। बिहार की राजनीति में यह रिकॉर्ड अपने आप में एक इतिहास है। लेकिन इतिहास तब बोझ बन जाता है जब वर्तमान उसे स्वीकार न करे।

आज नीतीश की हालत उस अनुभवी कप्तान जैसी है जिसे अपनी टीम तो क्या, खुद पर भी भरोसा नहीं रहा।

राजनीति में 'पलटी' को उन्होंने कला बना दिया। कभी भाजपा, कभी राजद, कभी महागठबंधन, कभी एनडीए — जैसे कोई नदी अपनी दिशा भूल गई हो और बस किनारों से टकरा रही हो।

लालू यादव का 'जंगलराज' खत्म कर 'सुशासन बाबू' के रूप में उभरे नीतीश अब खुद 'सत्ता राज' के प्रतीक बन चुके हैं — सत्ता किसी भी ओर हो, बस उस पर रहना है।

राजनीति के इंजीनियर का सर्किट जल चुका है

नीतीश कुमार का जन्म नालंदा के कल्याण बीघा में हुआ था — वही भूमि जो कभी ज्ञान की राजधानी थी। वहीं से निकला यह इंजीनियर जब राजनीति में आया तो उसने वादों और विश्वास का नया मॉडल पेश किया।

पर हर मशीन की एक सीमा होती है।

वो मशीन जो 1990 में चंद्रशेखर की सरकार में कृषि मंत्री बनकर चली थी,

आज 2025 में फाइलों, गठबंधनों और बयानों के बोझ तले कराह रही है।

नीतीश कभी भाजपा के साथ रेल मंत्री रहे, कभी लालू के साथ डिप्टी सीएम बनाए तेजस्वी के भागीदार।

लेकिन आज सवाल है — क्या यह वही नीतीश हैं, जो कभी बिहार के हर गांव में 'विकास पुरुष' कहलाते थे?

अब उनकी छवि 'राजनीति के पलटूराम' के रूप में स्थिर हो गई है — न स्थिरता बची, न विचारधारा।

नीतीश का जनाधार- जाति की दीवारों में फंसा एक चेहरा

बिहार की राजनीति जातीय समीकरणों से बनती है, टूटती है। नीतीश कुमार कुर्मी समुदाय से आते हैं — संख्या में सीमित, पर राजनीतिक रूप से प्रभावशाली।

उनकी ताकत हमेशा संतुलन साधने में रही, जनाधार में नहीं।

ऊंची जातियों ने उन्हें लालू के खिलाफ एक प्रयोग के रूप में इस्तेमाल किया, और वह प्रयोग सफल भी हुआ — लेकिन हर प्रयोग की एक एक्सपायरी डेट होती है।

आज वही ऊंची जातियां भाजपा के साथ हैं, वही पिछड़े वर्ग तेजस्वी यादव की तरफ देख रहे हैं, और वही युवा वर्ग प्रशांत किशोर और चिराग पासवान में नई उम्मीदें खोज रहा है।

नीतीश अब न 'ऊंचों के अपने' रहे, न 'नीचों के नेता'।

अंत नहीं, संक्रमण है यह

नीतीश कुमार की कहानी किसी हार की कहानी नहीं है।

यह उस युग की कहानी है जहां राजनीति ने विचारधारा को रणनीति में बदल दिया।

नीतीश ने दिखाया कि कैसे बिना जनाधार के भी सत्ता में जिया जा सकता है — और अब बिहार दिखा रहा है कि कैसे सत्ता में रहकर भी अस्तित्व खोया जा सकता है।

भविष्य में बिहार का नेतृत्व चाहे प्रशांत किशोर के हाथ जाए या चिराग पासवान के,

इतना तय है कि नीतीश कुमार का 'सुशासन युग' इतिहास की किताबों में दर्ज होकर अब फाइलों के साथ बंद हो जाएगा।

'राजनीति का सबसे बड़ा सत्य यही है — कोई हमेशा राजा नहीं रहता, और कोई हमेशा प्रजा नहीं।'

बिहार अब नई पटकथा लिख रहा है, और इस बार नायक वह नहीं जो सत्ता में है —

बल्कि वह होगा, जो सत्ता की भाषा को बदल देगा।

चिराग बनाम प्रशांत: भविष्य के चेहरे या हवा में तैरते बुलबुले?

बिहार की गलियों में अब दो नाम चर्चा में हैं — प्रशांत किशोर और चिराग पासवान।

एक रणनीतिकार है जिसने पूरे भारत में चुनावी मशीनें खड़ी कीं,

दूसरा एक युवा चेहरा है जिसने 'मॉडर्न बिहारी' की भाषा में बात करनी शुरू की।

प्रशांत किशोर ने गांव-गांव घूमकर 'जनसुराज यात्रा' से जमीनी नेटवर्क बनाया है। वहीं चिराग पासवान 'रामविलास की विरासत' के नाम पर दलित और युवा मतदाताओं को जोड़ रहे हैं। दोनों के बीच की लड़ाई सिर्फ सीटों की नहीं, प्रतीक की है — एक 'नया बिहार' चाहता है, दूसरा 'पुराने बिहार की इज्जत' बचाना चाहता है। नीतीश के जाने से भाजपा को सत्ता का रास्ता जरूर मिल सकता है, लेकिन सत्ता के केंद्र में अब दिल्ली नहीं, पटना के नए चेहरे होंगे।

'गेम ओवर' या 'लास्ट मूव'?

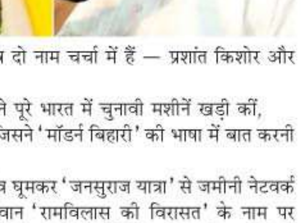

राजनीति में मौत कभी घोषित नहीं होती – वह धीरे-धीरे आती है।

आज नीतीश के भाषणों में लड़खड़ाहट दिखती है, उनकी आंखों में शून्यता और शरीर में थकान।

प्रशांत किशोर ने खुलकर कहा है कि 'नीतीश मानसिक रूप से बीमार हैं, उन्हें बात याद नहीं रहती।'

यह बयान सिर्फ राजनीतिक हमला नहीं है – यह उस राजनीतिक बुढ़ापे का प्रमाण है, जिसे कोई नेता स्वीकार नहीं करना चाहता।

भाजपा के लिए भी नीतीश अब 'एसेट' नहीं, बल्कि 'लायबिलिटी' बन चुके हैं।

नीतीश को साथ रखो तो वोट नहीं मिलते, छोड़ो तो दलित-पिछड़ा समीकरण बिगड़ जाता है।

यानी भाजपा अब उस स्थिति में है – 'साथ दौड़े तो हारे, अकेले दौड़े तो भी हारे।'

सोशल मीडिया पर देह की नुमाइश

क्या हो गया है आजकल औरतों को? सोशल मीडिया पर उठते कोलाहल में हर ओर एक ही स्वर गूंज रहा है - देह प्रदर्शन का। कहीं चटकते-फड़कते रील्स में, कहीं भड़कते-उलझते डांस मूव्स में, और कहीं ज़ूम इन होती नज़रों के बीच, बस एक ही प्रदर्शन - अपनी चपल देह की अदा का। मानो देह ही पहचान बन गई हो।

सच पूछो तो इस दौर में देह का कारोबार जितना खुलकर हो रहा है, उतना पहले कभी न हुआ था। सोशल मीडिया ने देह को एक 'प्रॉडक्ट' बना दिया है, जिसे जितना ज्यादा दिखाओ, उतना ज्यादा लाइक्स, फॉलोअर्स और व्यूज़ बटोर लो। मानो आत्मसम्मान का कद अब कमेंट्स की लंबाई और लाइक्स की संख्या से मापा जाने लगा हो।

वो जो कभी सभ्यता की पहचान थी, अब डिजिटल हाट बाजार में बिक रही है। जिस समाज में नारी का सम्मान उसकी आंखों की लज्जा, चेहरे की सौम्यता और आचरण की मर्यादा से आंका जाता था, वहां आज उसका अस्तित्व उसके चोली के घेरे और पिंडलियों की नुमाइश में सिमट कर रह गया है।

यह डिजिटल क्रांति का अजीब दौर है, जहां औरतें 'बोल्ड' होने का झूठा अर्थ 'बदन दिखाने' से जोड़ बैठी हैं। यह कैसी आज़ादी है, जहां अपनी पहचान की कीमत देह के टुकड़ों में चुकानी पड़े? औरतें खुद को जिस फेमिनिज्म की आड़ में उभार रही हैं, क्या वो असल में नारी शक्ति का उत्थान है, या महज़ लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़? सोचिए, इस देह प्रदर्शन की होड़ में कितनी महिलाएं खुद को खो रही हैं? क्या यह वाकई सशक्तिकरण है या एक नया बंधन, जहां औरतें एक डिजिटल पिंजरे में फंसती जा रही हैं, अपनी असली पहचान को खोकर बस एक देह भर बनती जा रही हैं?

नारी स्वतंत्रता का अर्थ तो आत्मसम्मान, शिक्षा, और निर्णय लेने की स्वतंत्रता था, न कि केवल बदन दिखाने का अधिकार। ये तो वही हुआ जैसे किसी को सोने की चिड़िया बना दो और फिर पिंजरे में कैद कर दो।सवाल यह है कि क्या हमें इस डिजिटल कोलाहल से बाहर निकलकर असली स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा? या फिर हम बस लाइक्स और फॉलोअर्स के खेल में उलझकर अपने असली अस्तित्व को खो देंगे?

आज सोशल मीडिया एक ऐसा मंच बन चुका है, जहां कुछ महिलाएं खुद को साबित करने के लिए हर हद पार कर रही हैं। कपड़ों का छोटा होना और बोल्ड पोज़ देना ही अगर 'बोल्डनेस' है, तो फिर आत्मविश्वास, शिक्षा, और स्वाभिमान का क्या? क्या यही है सशक्तिकरण का असली मतलब? क्या हमारा समाज वाकई इतना सतही हो गया है कि हम केवल बदन के आधार पर किसी की कीमत आंकने लगे हैं? सोचिए, आज जो महिलाएं देह प्रदर्शन को सशक्तिकरण मान रही हैं, क्या वो सच में खुद को सशक्त महसूस करती हैं? क्या उन्हें पता है कि वो केवल एक डिजिटल उत्पाद बनकर रह गई हैं, जिनका मूल्य केवल उनके शरीर के आकार और नृत्य कौशल से मापा जाता है?

यह समस्या केवल महिलाओं की नहीं है, बल्कि उस पूरी डिजिटल संस्कृति की है, जिसने नारी शरीर को एक मनोरंजन सामग्री बना दिया है। वो शरीर जो कभी मातृत्व, प्रेम और करुणा का प्रतीक था, आज महज़ व्यूज़ और फॉलोअर्स की भूख का साधन बन गया है।

अब सवाल यह है कि क्या हमें इस डिजिटल कोलाहल से बाहर निकलकर असली स्वतंत्रता का अर्थ समझना होगा? या फिर हम बस लाइक्स और फॉलोअर्स के खेल में उलझकर अपने असली अस्तित्व को खो देंगे? आखिर सवाल यह है कि क्या देह का प्रदर्शन वाकई सशक्तिकरण है या बस एक भ्रम? क्या आज की नारी अपनी असली पहचान से दूर होती जा रही है, जहां उसकी शक्ति, बुद्धि और आत्मविश्वास की जगह सिर्फ उसके शरीर का आकार और आकर्षण ही अहम रह गया है? यह डिजिटल युग हमें नई संभावनाओं और अभिव्यक्ति की आज़ादी देता है, पर क्या यह स्वतंत्रता वाकई हमें आज़ाद कर रही है या बस एक और जाल में फंसा रही है?

नारी स्वतंत्रता का अर्थ केवल कपड़ों की लंबाई या शरीर के प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। असली स्वतंत्रता है अपने विचारों, अधिकारों और आत्मसम्मान की रक्षा करना। यह वो स्वतंत्रता है, जो एक नारी को उसकी असल पहचान देती है - एक शिक्षित, आत्मनिर्भर और सशक्त इंसान के रूप में।

सोशल मीडिया पर जिस दिखावे की होड़ मची है, वह केवल लाइक्स और फॉलोअर्स की दौड़ नहीं, बल्कि आत्मसम्मान की गिरावट का प्रतीक है। यह एक डिजिटल पिंजरा है, जहां औरतें खुद को स्वतंत्र मानते हुए भी एक गहरे बंधन में बंधी हुई हैं।

हमें यह समझना होगा कि असली सशक्तिकरण आत्मनिर्भरता, शिक्षा और आत्मसम्मान में है, न कि केवल देह प्रदर्शन में। अगर हमें सही मायनों में नारी शक्ति को बढ़ाना है, तो हमें इस भ्रम से बाहर आना होगा और एक ऐसा समाज बनाना होगा, जहां औरतें अपनी पहचान अपने विचारों से बनाएं, न कि केवल अपने शरीर से।

प्रेम दर्शन है, तुम प्रदर्शन कर रही हो !

क्यों विलास की अग्नि में,
तुम मन चंदन जला रही हो ?
प्रेम जो आत्मा का अनुभव है,
उसे बाज़ार में तौल रही हो !

क्या नहीं सुनी थी तुमने
राधा की मौन प्रतीक्षा की कथा?
जहाँ एक दृष्टि में ब्रह्म झलकता था,
और एक बाँसुरी में ब्रह्मांड गूँजता था।
मीरा ने घूँघट नहींउठाया, जहर पिया था —
पर आत्मा अजर रही थी।
राम ने सागर बाँधा था —
किसी देह तक पहुँचने नहीं,
एक प्रतिज्ञा निभाने के लिए।
शिव ने सती को जलाया नहीं —
अहं को भस्म किया था।

फिर क्यों तुम —
समय के इस चौराहे पर
देह की नृत्यशाला सजाए बैठी हो ?
क्यों तुम इस देह के मेले में
आत्मा की मूरत तोड़ रही हो?
क्यों चेतना की थाली में
वासना का भोग धर रही हो?
प्रेम तो दर्शन है, क्यों
तुम क्यों उसे प्रदर्शन बना रही हो !

सच्चे प्रेमी जानते थे —
स्पर्श नहीं, दृष्टि ही संसार रच देती है।
एक मौन मुस्कान भी वचन बन जाती है।
उनके लिए नेह पवित्र था —
स्पर्श तक पाप की सीमा में गिना जाता था।
और आज...
वो रसिक आत्माएँ कहीं खो गई हैं —
भीड़ के बीच, मोबाइल की स्क्रीन पर।

नेह जहाँ निर्मल था —
वहाँ अब नियोजन है।
और जो कभी साधना थी —
वो अब 'ट्रेंड' बन गई है।
क्यों प्रेम की परंपरा का
अपमान कर रही हो ?
प्रेम दर्शन का विषय है,
तुम प्रदर्शन कर रही हो !

हे नव युग की प्रेयसी,
जब अगली बार 'लव' कहना —
तो तन से नहीं, मन से कहना।
क्योंकि —
प्रेम तो आत्मा का प्रकाश है,
तुम उसे क्यों देह का प्रदर्शन बना रही हो !
प्रेम तो दर्शन का विषय है, प्रदर्शन का नहीं।

नरेन्द्र पाण्डेय

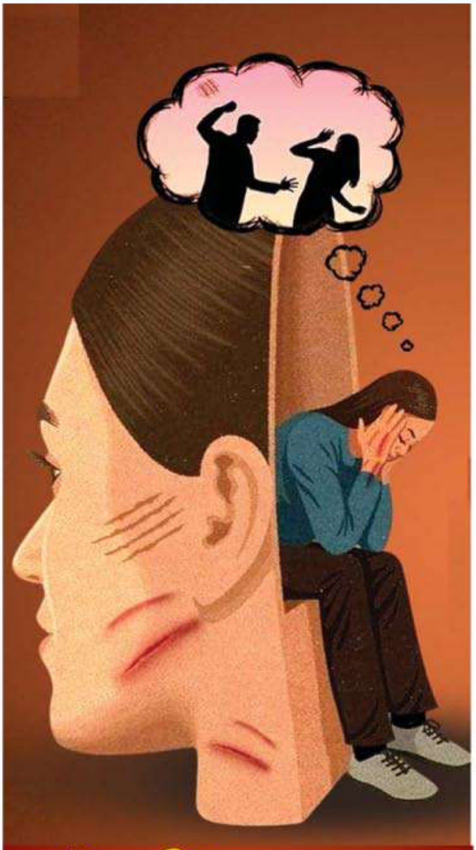

घरेलू हिंसाः समाज की छुपी जंजीरें

घरेलू हिंसा अब केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक समस्या नहीं रही। यह हमारे समाज की मानसिकता, कानूनी ढांचे और प्रशासनिक कमज़ोरियों का दर्पण भी है। हाल ही में लाईफ वर्सिटी द्वारा आयोजित वेबिनार में देशभर के विशेषज्ञों ने इस संवेदनशील विषय पर अपने अनुभव साझा किए और घरेलू हिंसा की जटिलताओं को उजागर किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय ने किया, जिनकी शैली में तथ्य, गहन विश्लेषण और मानवीय संवेदनाएं एक साथ सामने आती हैं।

वेबिनार ने ग्रामीण और शहरी समाज में घरेलू हिंसा के अलग-अलग स्वरूपों पर प्रकाश डाला। विशेषज्ञों ने बताया कि हिंसा का स्वरूप भले ही अलग हो, लेकिन जड़ें लगभग समान हैं—सामाजिक दबाव, मानसिक असंतुलन और पारिवारिक अनुकूलता की कमी। चर्चा के मुख्य विषय थे- घरेलू हिंसा की बदलती अवधारणा, पारिवारिक संबंधों में अनुकूलता की कमी, पुरुष और महिला दोनों पीड़ित, विवाह से जुड़े नैतिक मूल्यों में गिरावट, वीमेन एम्पावरमेंट और विवाहिक संबंध, लिव-इन रिलेशनशिप, विवाह की दृढ़ता और एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर।

एनसीआरबी की 2022 की रिपोर्ट ने घरेलू हिंसा और महिलाओं के खिलाफ अपराध की बढ़ती दर को स्पष्ट किया है। रिपोर्ट के प्रमुख बिंदु हैं

- **महिलाओं के विरुद्ध अपराध में 4% की वृद्धि।**
- **बच्चों पर हिंसा में 8.7% बढ़ोतरी।**
- **हर घंटे औसतन 51 एफआईआर दर्ज।**
- **महिलाओं पर सायबर अपराध में 24.4% की वृद्धि।**

ये आंकड़े न केवल चिंताजनक हैं, बल्कि यह दर्शाते हैं कि समाज और प्रशासन के स्तर पर अभी भी ठोस कार्रवाई की आवश्यकता है।

घरेलू हिंसा- स्वरूप और कारण

क्रिमिनल साइकोलॉजिस्ट डॉ. शुभ्र सान्याल ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू हिंसा अक्सर पारंपरिक सामाजिक दबाव, जातीय मान्यताओं और आर्थिक निर्भरता से जुड़ी होती है। यहां पीड़ितों के पास न्याय या मदद पाने के विकल्प सीमित होते हैं। वहीं, शहरी क्षेत्रों में हिंसा मानसिक तनाव, रोजगार की असुरक्षा और व्यक्तिगत नियंत्रण के खेल के रूप में उभरती है।

> **आज के समय में घरेलू हिंसा के कारण सिर्फ बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक और मानसिक भी हैं। करियर, समय की कमी और सामाजिक अलगाव इसे जटिल बनाते हैं।**
>
> **- डॉ. शुभ्र सान्याल**

विशेषज्ञों ने कुछ नए कारण भी सामने रखे, जो आधुनिक समय में घरेलू हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं-

- **कामकाजी जीवन और करियर ओ**रिएंटेशन – नौकरी और करियर की प्राथमिकताओं के कारण परिवार को समय न देना, रिश्तों में दूरी पैदा करता है।
- **सांस्कृतिक और पारिवारिक मूल्यों से दूरी** – आधुनिक जीवनशैली के कारण पारिवारिक परंपराओं और सांस्कृतिक रीतियों से दूरी बढ़ी है।
- **सामाजिक गतिविधियों में कम भागीदारी** – समुदाय और सामाजिक नेटवर्क से कटाव भावनात्मक समर्थन को कम करता है।
- **सहनशीलता की कमी और प्रतिक्रियाशील व्यवहार** – तनाव, मानसिक दबाव और प्रतिस्पर्धा के कारण लोग छोटे मुद्दों पर अधिक प्रतिक्रिया देने लगते हैं।

प्रशासनिक और कानूनी दृष्टिकोण

छत्तीसगढ़ के पूर्व डीजीपी डी एम अवस्थी और रायपुर के

सामाजिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक बदलाव

जामिया इस्लामिया के प्रो. डॉ. जलील अहमद, बीएचयूपी यूपी से डॉ. कमलेश तिवारी और आईआईटी हैदराबाद से भूमिका भट्ट ने कहा कि संस्कृति, पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक गतिविधियों से दूरी पीड़ितों को कमजोर बनाती है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समाज में जमी पुरानी धारणाओं को बदलना अनिवार्य है।

जब तक समाज पीड़ित को दोषी मानने की प्रवृत्ति नहीं छोड़ेगा, घरेलू हिंसा जड़ से समाप्त नहीं होगी।

समाधान के चार स्तंभ

वेबिनार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि विशेषज्ञों ने केवल समस्या की पहचान नहीं की, बल्कि समाधान के ठोस मार्ग भी सुझाए। ये चार स्तंभ हैं-

- **सुरक्षा**- पीड़ितों का तत्काल और सतत संरक्षण।
- **कानूनी सहायता**- तेज़, सुलभ और प्रभावी न्याय।
- **मानसिक समर्थन**- काउंसलिंग, भावनात्मक सहयोग और सामुदायिक नेटवर्क।
- **सामाजिक जागरूकता**- पारिवारिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण में बदलाव, शिक्षा और सक्रिय भागीदारी।

घरेलू हिंसा कोई अकेले की कहानी नहीं है; यह समाज की छुपी हुई जंजीरें हैं। इसे तोड़ने का प्रयास केवल कानून और प्रशासन तक सीमित नहीं रह सकता। यह हर परिवार, स्कूल और समाज की जिम्मेदारी है कि पीड़ितों को उनकी आवाज़ और अधिकार दिलाए, ताकि भय और अत्याचार के साए से मुक्त समाज का निर्माण हो सके।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जो 2047 तक विकसित भारत का खाका खींचा है, उसका रास्ता केवल आर्थिक विकास और भू-आयामी प्रगति से नहीं गुजरता। इसके लिए देश की आधी आबादी की पूर्ण सुरक्षा और विशेषकर महिलाओं और बच्चों के खिलाफ हिंसा को जड़ से समाप्त करना अनिवार्य है। यही कारण है कि महिलाओं और बच्चों के खिलाफ बढ़ती हिंसा पर एक सघन राष्ट्रीय विमर्श की आवश्यकता है।

सुरक्षा और तेज कानूनी प्रक्रिया हर पीड़ित का मूल अधिकार है, चाहे वह गांव में हो या शहर में।

पूर्व सीएसपी जीएस बाम्बरा ने प्रशासनिक दृष्टिकोण साझा किया। ग्रामीण इलाकों में पुलिस और प्रशासनिक पहुंच सीमित होती है, जिससे पीड़ितों को सुरक्षा और सहायता पाने में अधिक समय लगता है। शहरी क्षेत्रों में सुविधाएं अधिक होने के बावजूद, सामाजिक दबाव और शर्मिंदगी पीड़ितों को न्याय से दूर रखती हैं।

कानूनी प्रक्रियाओं पर **दिल्ली के एसीपी राजपाल डबास** और **एनएलयू भोपाल के प्रो. डॉ. तपन मोहंती** ने जोर दिया कि कानून जितना तेज़ और सुलभ होगा, न्याय पाने की संभावना उतनी बढ़ेगी। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी अधिक है, जबकि शहरी क्षेत्रों में जानकारी होने के बावजूद समय की कमी और सामाजिक दबाव पीड़ितों को न्याय से दूर रखते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक समर्थन

नई दिल्ली की मनोवैज्ञानिक राशी जुनेजा और डॉ. दिव्या मदान ने रूरल और अर्बन दोनों परिप्रेक्ष्यों में मानसिक स्वास्थ्य की भूमिका पर प्रकाश डाला। ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक नेटवर्क और सामाजिक समर्थन सीमित होता है, जिससे पीड़ित अकेलापन महसूस करते हैं। शहरी क्षेत्रों में काउंसलिंग और हेल्पलाइन उपलब्ध हैं, लेकिन अकेलापन, करियर दबाव और प्रतिस्पर्धा अधिक होने के कारण मानसिक स्वास्थ्य कमजोर पड़ता है।

यूपी की पूर्व जेल अधीक्षक हर्षिता मिश्रा ने कहा कि सजा और सुधारात्मक उपायों का संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। केवल दंड से अपराध रुकता नहीं; मानसिक पुनर्वास और सुरक्षा दोनों जरूरी हैं।

भारत की प्रगति तब सच्ची होगी, जब हर नागरिक सुरक्षित और सम्मानित महसूस करेगा। घरेलू हिंसा के खिलाफ लड़ाई सिर्फ कानून या प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है। यह हर नागरिक, हर परिवार और पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

-डॉ. नरेन्द्र पाण्डेय, संपादक, लाईफ वर्सिटी

वेबिनार की पूरी रिकॉर्डिंग SCGNews के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है।

कहानी

मोहब्बत के बीच की छुट्टी

सुबह की चाय खत्म कर समीर ने अपना लैपटॉप बैग बंद किया और मुस्कराते हुए बोला,

'शालिनी , आज दिल्ली के लिए निकल रहा हूँ... । वैसे भी तुम्हें तो मेरी गैरमौजूदगी में फ़ुरसत मिल जाती है न?'

शालिनी मुस्कराई, पर आँखों में हल्की सी नमी थी —

'फुरसत मिलती है या खालीपन, ये मैं ही जानती हूँ'.

'यार शालिनी, उदास मत हो प्लीज़, सिर्फ़ पाँच दिन की बात है। सोमवार को गया तो शुक्रवार को लौट आऊँगा। तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।'

शालिनी की आवाज़ में कोमल ठहराव था,

'तुम्हारे बिना घर सूना लगता है बच्चों का शोर भी जैसे खामोश हो जाता है।'

समीर ने हँसते हुए कहा, 'अरे, तुम्हारे बिना तो मैं भी नहीं रह सकता..

और हँसते हुए उसके बालों को पीछे किया,

'वाह, बीस साल की शादी के बाद भी तुम ये बातें कहती हो, कितनी लकी हूँ मैं कि मेरे पास तुम्हारे जैसी इमोशनल वाइफ़ है।'

इतना कहकर उसने उसे हल्के से बाँहों में भर लिया। क्या करें — प्रोजेक्ट रिपोर्ट है, क्लाइंट मीटिंग है... चलो, बस कुछ दिन की बात है।'

शालिनी ने धीरे से कहा, 'हाँ, कुछ दिन की ही तो बात है।'

समीर ने उसका माथा चूमा, फिर बैग उठाया और बाहर निकलते हुए बोला,

'ध्यान रखना अपना... और हाँ, मेरे बिना ज़्यादा इमोशनल मत होना, फोन पर रोज बात होगी।'

'फोन तो रहेगा ही न हमारे बीच, और हाँ, मिस मत करना ज़्यादा,' वह आँख मारता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ गया।

शालिनी बालकनी में खड़ी उसे जाते हुए देखती रही। नीचे गाड़ी में बैठते हुए समीर ने ऊपर देखा और हाथ हिलाया — जैसे हर बार करता था। वह पल उसके दिनचर्या का हिस्सा था — अलविदा के साथ लौटने की उम्मीद का संकेत।

दरवाज़ा बंद कर जब वह अंदर आई, तो दीवार की घड़ी में साढ़े नौ बज रहे थे। उसने खुद को आईने में देखा, हल्का मेकअप ठीक किया, और खुद से बोली —'अब ज़िंदगी थोड़ी अपनी भी तो है,' उसने मन ही मन कहा।

'अब शुरू होती है मेरी हफ्तेभर की आज़ादी।'

उसने अपनी सबसे करीबी दोस्त रिया को कॉल लगाया,

'रिया, आज फ्री है न?'

'अरे, तो समीर निकल गए क्या?' रिया हँसी।

'हाँ, अभी-अभी। सोच रही हूँ, मूवी का प्लान करें, फिर लंच?'

'वाह! मुझे पता था, तू तैयार बैठी होगी। आधे घंटे में मिलती हूँ।'

शालिनी ने हँसते हुए कहा, 'सुन, नेहा और प्रीति को भी बोल दे।'

थोड़ी ही देर में चारों सहेलियाँ मिल गईं। सब की उम्र लगभग समान — बच्चे बड़े हो चुके, पति अपनी-अपनी दौड़ों में व्यस्त।

इनके लिए ये कुछ घंटे 'अपने होने' का उत्सव थे — जब न कोई 'क्या बनाऊँ' का सवाल होता, न कोई टाइमटेबल।

मॉल के भीतर कॉफी के कप से उठती भाप के साथ हँसी की लहरें फूट पड़ीं।

नेहा बोली, 'काश! मेरे पति भी ट्रैवल करते, ये रोज़-रोज़ का 'चाय दो', 'कपड़े कहाँ रखे' वाला रुटीन तोड़ने का मन करता है।'

रिया ने हँसकर कहा, 'तू भी न! मेरा तो अब इंतज़ार रहता है कि वरुण कब टूअर पर जाए।'

शालिनी बोली, 'हाँ, कुछ दिन अकेले रहना ही तो रीसेट जैसा है, तब ही तो दोबारा उन्हें उतना ही चाहने का मन करता है।'

सब खिलखिलाकर हँस दीं। मूवी, लंच, थोड़ी शॉपिंग — और शाम ढलते ही सब अपने-अपने घर लौट आईं।

घर में सन्नाटा था।

आरव और आन्या को सुबह ही चाबी दे दी थी। दोनों अपने कोचिंग से लौटकर अब ऑनलाइन गेम में लगे थे।

'मम्मी, आज डिनर में क्या बनाएँ?' आरव ने पूछा।

शालिनी ने मुस्कराकर कहा, 'तुम्हें क्या लगता है, क्या बनाऊँ?'

'बाहर से मँगवा लो न, पापा तो वैसे भी घर का ही पसंद करते हैं, आज कुछ डिफरेंट खा लेते हैं,' आन्या बोली।

शालिनी ने थोड़ा संजीदगी से कहा, 'बाहर का रोज़ खाना हेल्दी नहीं होता बेटा।'

'प्लीज़ मम्मी, आज पापा नहीं हैं न' दोनों ने एक साथ कहा।

'ठीक है, आज सिर्फ़ आज के लिए।' उसने थोड़ा नाटकीय अंदाज़ में कहा।

ऑनलाइन ऑर्डर होते ही बच्चे खुश।

शालिनी ने अपने लिए हल्का डिनर रखा — सिर्फ़ टोस्ट और सूप।

रात को सब सो गए।

उसने जगजीत सिंह की ग़ज़लें ऑन कीं, पर्दे खींचे, और मंद रोशनी में अकेली बैठी रही।

कॉफी का कप हाथ में था। बाहर चाँद की परछाई बालकनी पर फैली थी।

तुमको देखा तो ये ख़याल आया'

कमरे में नर्मी घुल गई।

कपड़ों की सिलवटें नहीं, प्लेटों की जगह नहीं, कोई इंतज़ार नहीं कि 'क्या बना है डिनर में'।

बस वो थी, उसकी साँसें थीं, और एक मीठी शांति थी।

समीर के होने में जो सलीकापन था, उसकी गैरमौजूदगी में वही आज़ादी बन जाती थी।

कोई पूछने वाला नहीं कि 'तुमने अभी तक सोई क्यों नहीं?' या 'कुशन कवर उलटे क्यों हैं?'

इन छोटे-छोटे 'न होने' में उसे अपने 'होने' का आनंद मिलता था।

वह जानती थी — वह समीर से बहुत प्यार करती है।

लेकिन वह यह भी जानती थी कि यह 'अकेले का समय' उसके प्यार को और गहराई देता है।

इन दिनों में वह खुद से मिलती है — अपनी थकान से, अपनी मुस्कान से, अपने अस्तित्व से।

समीर जब लौटता है, तो शालिनी उसे और ज़्यादा अपनापन दे पाती है।

उसके भीतर का ठहराव लौट आता है — जैसे लहरें किनारे को छूकर फिर शांत हो जाती हैं।

हर औरत की तरह वह भी अपनेपन में घुलते हुए खुद को खो देती है, और फिर जब ऐसे कुछ पल मिलते हैं, तो उसे लगता है कि वो फिर से जी उठी है।

सुबह समीर का फोन आता है —

'क्या कर रही थी?'

वो मुस्कराती है, 'बस, तुम्हें याद कर रही थी।'

'सच?'

'हाँ, लेकिन थोड़ा अपने आपको भी।'

फोन के उस पार कुछ पल की चुप्पी रही, फिर समीर ने कहा,

'यार तुमसे दूर जाने का मन आज भी नहीं करता । '

शालिनी हँस पड़ी —

'तुम लौटो पहले, मैं तो यहीं हूँ, बस थोड़ा खुद में।'

वैसे 'अगला टूअर कब है, जानू ?'

और इसी सवाल के साथ दोनों हँस पड़े —

क्योंकि जवाब तो समीर और शालिनी दोनों पता होता है,

तभी शालिनी की धीमी आवाज गूँजी ...कब लौटोगे ?

पर यह सवाल किसी तन्हाई से नहीं, मुस्कान से निकला था।

तकनीक में तरक्की, पर मन में तनहाई

डॉ अनिल गुप्ता
फाउंडर पॉजिटिव हेल्थ जोन
डायरेक्टर श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल, रायपुर

आज हम अपने पूर्वजों से कहीं अधिक समय तक जीवित रहते हैं, परंतु पहले से कहीं अधिक बीमार हैं।

जीवन लंबा हुआ है, पर स्वास्थ्य छोटा।

तकनीक बढ़ी है, पर शांति घट गई है।

मनुष्य ने दुनियाँ जीत ली मगर खुद को खो दिया

एक समय था जब मनुष्य अपनी सभी इंद्रियों पर नियंत्रण रखता था।

हमारे पूर्वज न केवल प्रकृति को जानते थे, बल्कि उसके साथ समरस होकर जीते थे।

तब अस्वस्थता या असंतुलन शब्द जीवन के शब्दकोश में नहीं थे।

जीवन मात्र एक उत्सव था - एक अनुभव जिसे 'सत्य' कहा जाता था।

लेकिन आज का युग उलट गया है।

लोगों ने अमृत की खोज में अपना समय खो दिया है।

हम उपलब्धियों के अंधड़ में उलझ गए हैं — और आत्मा की आवाज़ अब शोर में खो गई है।

आध्यात्मिकता की बाढ़, पर भीतर सूखा क्यों?

आज हम ऐसे समय में हैं जब आध्यात्मिकता की कमी नहीं है।

हर चैनल पर प्रेरक वक्ता, हर सोशल मीडिया पोस्ट में कोई न कोई 'गुरु वाक्य'।

फिर भी भीतर खालीपन है। यह इसलिए क्योंकि आध्यात्मिकता आज जानकारी बन गई है, अनुभव नहीं। हम सुनते बहुत हैं, पर जीते कम हैं।

किसी और के अनुभव को अपनाकर अपनी आत्मा को भरने की कोशिश करते हैं,

पर आत्मा किसी और के शब्दों से नहीं, स्वयं की खोज से जागती है।

आध्यात्मिकता किताबो से नहीं अनुभव से मिलती है

धर्म से पहले ध्यान जरुरी है क्योंकि वहीं से आत्मा बोलती है

आध्यात्मिकता - आत्मा का अभ्यास

यदि आप अपने जीवन को संतुलन, सौंदर्य और समृद्धि से भरना चाहते हैं,

तो पहला कदम 'धर्म' नहीं, 'ध्यान' है।

अपने भीतर के उन पहलुओं को पहचानिए जो आपको पोषण देते हैं –

आपका प्रेम, आपका संगीत, आपका मौन, आपकी प्रार्थना।

आध्यात्मिकता कोई जटिल साधना नहीं,

यह रोज़मर्रा की संवेदना है —

किसी की मदद करने की भावना,

किसी पेड़ को सींचने की करुणा,

या बस कुछ क्षण अपने भीतर उतर जाने की सादगी।

हर दिन कुछ मिनट ऐसे कार्यों के लिए निकालिए जो आपकी आत्मा को विकसित करें –

सामुदायिक सेवा, स्वयंसेवी कार्य, ध्यान, योग, या बस एक मौन सैर।

ये छोटे अभ्यास शरीर, मन और आत्मा – तीनों को एक धारा में जोड़ते हैं।

मनुष्य का असंतुलन -और उसकी जड़ें

जब व्यक्ति अपने भीतर की शांति से कट जाता है,

वह बाहर की वस्तुओं से जुड़ने लगता है —

मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया से 'ओवर-कनेक्टेड', पर ईश्वर और स्वयं से 'डिस्कनेक्टेड'।

हमारी पीढ़ी अपने ही आनंद से अनजान है।

हम खुशियों के ऐप डाउनलोड करते हैं, पर शांति का सोर्स कोड भूल गए हैं। जो भयभीत, चिंतित और असंतुलित हैं, वे अनिवार्य रूप से शारीरिक और मानसिक बीमारियों की चपेट में आते हैं। क्योंकि आत्मिक असंतुलन ही सबसे गहरी बीमारी है।

हम सोशल मीडिया से ओवर कनेक्टेड है मगर खुद से डिसकनेक्टेड

पस्त मस्त होकर खुद और खुदा दोनों से जुदा हैं

आध्यात्मिक स्वास्थ्य-'स्व' की पहचान

आध्यात्मिक स्वास्थ्य कोई रहस्य नहीं,

यह दो शब्दों में सिमटा है-'स्व' और 'अस्तित्व'।

'स्व' यानी वह चेतना जो आपके भीतर है — जो न सुख से फूलती है, न दुख से टूटती है। और 'अस्तित्व' यानी वह ब्रह्मांड जो उसी स्व से जुड़ा है। जब आप स्वयं को जानने लगते हैं, तो धीरे-धीरे आपके भीतर के विकार, भ्रम और झूठे अहंकार पिघलने लगते हैं। आप अपने विचारों, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को देखने लगते हैं। यही 'आत्म-अध्ययन' का प्रारंभ है।

स्वस्थ जीवन का अर्थ केवल रोगमुक्त होना नहीं,बल्कि अपने भीतर के प्रकाश को पहचानना है।

खुद की और खुदा की खोज

आज मनुष्य परेशान है, हैरान है,

अपने सम्पूर्ण आनंद से अनजान है।

'पस्त-मस्त यह खुद और खुदा दोनों से जुदा है'।

यह समय है फिर से जुड़ने का — अपने आप से, अपने सृजनहार से, और उस ब्रह्मांडीय शक्ति से जो सबमें है। आइए एक यात्रा पर निकलें —'एक खोज खुद की और खुदा की।'

खुद को मानिए, खुद को जानिए, और फिर खुद को साधिए।

जब आप अपने भीतर लौटते है तो सृष्टि आपके भीतर उतरती है.

लाल उमेद सिंह ने साझा किए जीवन और सफलता के सूत्र

रायपुर की प्रमुख शैक्षणिक एवं सामाजिक संस्था युवा कोचिंग द्वारा आयोजित प्रेरणादायी सेमिनार ने आज युवाओं को नई ऊर्जा और दिशा दी। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. लाल उमेद सिंह, आईपीएस, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी), रायपुर एवं समाजिक लेखक एवं प्रेरक वक्ता डॉ नरेन्द्र पाण्डेय भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संस्था के संचालक श्री एम. राजीव कुमार ने किया।

संघर्ष से मिली शिक्षा

डॉ. लाल उमेद सिंह ने अपने जीवन के संघर्षों को साझा करते हुए बताया कि वे छत्तीसगढ़ के पेंड्रा क्षेत्र के छोटे से गांव मझगवां से आते हैं, जहाँ शिक्षा की सुविधाएँ अत्यंत सीमित थीं। उन्होंने बताया कि कठिनाइयों ने उन्हें मजबूत बनाया और हर चुनौती उन्हें सफलता की ओर ले गई।

'मैंने कठिनाइयों को कभी तकलीफ़ नहीं माना, बल्कि उन्हें रोमांचक यात्रा की तरह लिया। संघर्ष का आनंद लेना ही सफलता की कुंजी है।'

डॉ. सिंह ने अपने PSC परीक्षा पास करने की कहानी साझा की और यह बताया कि कैसे मेहनत, जिद और सकारात्मक सोच ने उन्हें आज इस मुकाम तक पहुँचाया।

डॉ. सिंह ने युवाओं के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए-

* **मेहनत पर अटूट विश्वास-** मेहनत का कोई विकल्प नहीं है।
* **कर्तव्य के प्रति समर्पण-**अपने काम में भक्ति भाव रखें।
* **जिद और आत्म-विद्रोह-**खुद से बगावत करना सीखें, यही सफलता की ताकत है।
* **सकारात्मक सोच-**कठिनाइयों को अवसर में बदलें।
* **स्क्रीन टाइम कम करें-** वास्तविक दुनिया को प्राथमिकता दें।
* **परिवार से सलाह लें-** कठिनाइयों में परिवार से मार्गदर्शन लें।

डॉ. सिंह के साथ मंच साझा करते हुए नरेंद्र पाण्डेय ने युवाओं को समाज और नारी सुरक्षा के प्रति जागरूक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा दी। पाण्डेय ने कहा कि केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान देना भी युवाओं का कर्तव्य है। युवा तभी सफल होंगे जब वे अपने सपनों के साथ-साथ समाज की जिम्मेदारी भी समझेंगे। शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, जीवन जीने की कला भी होनी चाहिए।

समाज तब सभ्य कहलाता है, जब उसके पास केवल कानूनों की किताबें नहीं, बल्कि उसकी चेतना में नारी के प्रति आदर हो। कानून भय से व्यवस्था देता है, पर सम्मान से सुरक्षा

केवल चेतना देती है।

'नारी की रक्षा तब नहीं होगी जब हम उसके चारों ओर दीवारें खड़ी करेंगे, बल्कि तब होगी जब हम उसके भीतर आत्मबल जगा देंगे।' नारी सुरक्षा का अर्थ केवल यह नहीं कि कोई उसे छू न सके, बल्कि यह कि कोई उसे कमतर न आंक सके। यह समानता, शिक्षा और आत्मविश्वास के माध्यम से सुनिश्चित की जा सकती है।

सेमिनार के अंत में एम. राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन युवाओं के लिए न केवल करियर मार्गदर्शन, बल्कि जीवन की सीख भी प्रदान करते हैं। संस्था आगामी महीनों में और भी प्रेरक कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करने की योजना बना रही है।

डॉ. लाल उमेद सिंह और डॉ नरेन्द्र पाण्डेय जैसे प्रेरक व्यक्तित्व युवाओं के लिए जीवन के आदर्श प्रस्तुत करते हैं। युवा कोचिंग जैसे संस्थान यह सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान तक सीमित न रहे, बल्कि जीवन और समाज की तैयारी भी हो। यह सेमिनार संदेश देता है कि युवा केवल ज्ञान की दौड़ में नहीं, बल्कि जीवन और समाज की तैयारी में भी उत्कृष्ट बनें। जब लेखक, अधिकारी और समाज के मार्गदर्शक मिलकर युवाओं को प्रेरित करते हैं, तो वे न केवल अपने सपनों को साकार करते हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक भी बनते है।

दशहरा पर्व नहीं आत्म संतुलन का दिन है

दशहरा - सत्य की असत्य पर विजय का पर्व। मित्रों यह सिर्फ ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि हमारे inner world और health के लिए भी गहरा संदेश समेटे हुए है।

रावण के दस सिर हमारे भीतर की दस मानसिक अशुद्धियाँ हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, ईर्ष्या, आलस्य, भय और संशय। जब हम ध्यान, जप, प्रार्थना और आत्मचिंतन से इन्हें जीत लेते हैं, तब असली विजयदशमी हमारे जीवन में घटित होती है।

दशहरे के दिन दसों दिशाएँ खुली मानी जाती हैं।

इसका अर्थ है - आप जिस भी दिशा में कदम बढ़ाएँ, ब्रह्मांडीय समर्थन आपके साथ होता है।

इसीलिए यह समय नए संकल्प और नई शुरुआत के लिए अत्यंत शुभ माना गया है।

नीलकंठ पक्षी का दर्शन-

शिव का प्रतीक है। जैसे भगवान शिव ने विष को अपने कंठ में रोक लिया और अमृत को दुनिया में बाँट दिया, वैसे ही हमें भी अपने भीतर की नकारात्मकता को रूपांतरित कर सकारात्मक ऊर्जा में बदलने की साधना करनी चाहिए।

दशहरा हमें यह सिखाता है कि असली स्वास्थ्य केवल शरीर का नहीं, बल्कि मन और आत्मा का संतुलन है।

“रावण का वध बाहरी घटना है, लेकिन इसका संदेश है — तनाव, चिंता और मानसिक असंतुलन पर विजय। योग और ध्यान के अभ्यास से हम मानसिक रावण को जीत सकते हैं।”

रावण का वध बाहरी घटना है, लेकिन इसका संदेश है-तनाव, चिंता और मानसिक असंतुलन पर विजय। योग और ध्यान के अभ्यास से हम मानसिक रावण को जीत सकते हैं।

आज के दिन नीलकंठ पक्षी देखना शुभ माना जाता है. नीलकंठ शिव की तरह हमें भी जीवन के 'विष' यानी नकारात्मक भावनाएँ, क्रोध, आक्रोश, ईर्ष्या आदि को रोककर उन्हें स्वीकृति और करुणा में रूपांतरित करना सीखना होगा। यह मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करता है।

दशहरे के समय मौसम बदलता है - वर्षा से शरद ऋतु की ओर। आयुर्वेद कहता है कि यह रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और शरीर को संतुलित करने का उत्तम समय है।

आध्यात्मिक दृष्टि से दशहरा हमें अहंकार और नकारात्मकता का दहन सिखाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मन-शरीर के संतुलन को साधने और नई ऊर्जा से जीवन शुरू करने का संकेत देता है।

इसलिए, दशहरे का पर्व हमें याद दिलाता है कि असली विजय वही है जहाँ मन शांत, शरीर स्वस्थ और आत्मा प्रकाशित हो।

मन का युद्ध भूमि

NLP

॥ श्रीमद्‌भगवद्‌गीता ॥

नरेन्द्र पाण्डेय

आज का इंसान रोज़ किसी न किसी चिंता, तनाव, या डर से जूझ रहा है। दोस्तों आज आपके पास सब कुछ है—नौकरी, परिवार, दोस्त...फोन की स्क्रीन पर हँसी भी है, और सोशल मीडिया पर लाइक्स भी। लेकिन फिर भी...भीतर कुछ खाली है। एक बेचैनी, जो रातों की नींद चुरा लेती है। एक डर, जो चेहरे की मुस्कान के पीछे छुपा रहता है। कभी भविष्य की चिंता, कभी रिश्तों की उलझनें, और कभी खुद से ही एक अनकहा युद्ध । ये सब... हमारे भीतर एक महाभारत रचते हैं।

हम सबके भीतर एक धृतराष्ट्र बैठा है— जो जानता तो है क्या सही है, लेकिन आंखें मूंद लेता है...मोह, लालच और अहंकार के पर्दे में। तो सवाल ये है—इस भीतर के धृतराष्ट्र से मुक्ति कैसे पाएं? कैसे लाएं अर्जुन जैसी स्पष्टता? कैसे जीतें अपना ही कुरुक्षेत्र?

गीता कहती है - यह क्षेत्र ही कुरुक्षेत्र है ...

'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।'

(हे अर्जुन, यह शरीर ही क्षेत्र है।) यानि, धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र कोई ज़मीन का टुकड़ा नहीं,बल्कि हमारा शरीर और मन है। युद्ध हमारे भीतर की दो सेनाओं के बीच हो रहा है —दैवी प्रवृत्तियाँ और आसुरी प्रवृत्तियाँ।

जब हम कहते हैं — 'मैं सही हूँ, बाकी सब ग़लत' और ज़िद पर अड़ जाते हैं,तो दुर्योधन हमारे भीतर जन्म लेता है। जब हम पुराने तरीकों से चिपके रहते हैं, तो हम भीष्म बन जाते हैं — विवेकवान, लेकिन जड़। जब हम बिना सोच-विचार के, सिर्फ दूसरों की नकल करते हैं, तो कर्ण बन जाते हैं — योग्य, लेकिन भ्रमित। लेकिन जब हम धैर्य,सच्चाई, प्रेम, सहनशीलता और मेहनत के साथ खड़े होते हैं,

तो पांडव हमारे भीतर जागते हैं। और जब निर्णय लेने की शक्ति डर में उलझ जाती है, तब अर्जुन बन जाते हैं — संशय में डूबे हुए।

तभी कोई भीतर से पुकारता है — 'डर मत, उठ! जो सही है, वही कर।' वो आवाज़ होती है — श्रीकृष्ण की। लेकिन... कृष्ण बनना आसान नहीं। इसके लिए चाहिए ब्रेन को समझने की कला, माइंड को पढ़ने की बुद्धि। और यही हमारा प्रयास है —'भगवद गीता' को सरलता से समझना — आधुनिक NLP और मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से।

गीता को मॉडर्न न्यूरो-लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग (NLP) की भाषा में समझने का। क्योंकि समाधान हमें बाहर नहीं, अपने भीतर खोजना है। और पहला अध्याय — अर्जुनविषादयोग — यानी मानसिक और भावनात्मक भूकंप की शुरुआत।

'कभी आपने खुद से सवाल किया है —कि जब कोई कठिन फ़ैसला लेना हो, तो दिल क्यों डरने लगता है? क्यों जीवन की सच्चाई से आंखें चुराना आसान लगता है? क्यों हम जानते हुए भी, सही कदम नहीं उठाते?'

अर्जुन भी वहीं था, धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में नहीं —बल्कि अपने ही मन के मैदान में खड़ा। और कह रहा था —

'न योत्स्य इति गोविन्द,' मैं युद्ध नहीं करूंगा।'

यानी, जब भावनाएँ भारी पड़ जाती हैं,तब अर्जुन का विषाद शुरू होता है और ये विषाद सिर्फ उसका नहीं —ये हम सबका है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥

धृतराष्ट्र बोले- 'हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में, जब मेरे बेटे और पांडु के बेटे युद्ध की इच्छा से जमा हुए, तो उन्होंने क्या किया?'

धृतराष्ट्र का यह सवाल सतह पर तो सामान्य लगता है, पर इसके भीतर एक पिता का डर छिपा है। धृतराष्ट्र अंधे हैं - न केवल आँखों से, बल्कि मन और विवेक से भी। उनका यह सवाल साधारण जिज्ञासा नहीं है। यह एक पिता की बेचैनी है, जो जानता है कि युद्ध की आग में उसके बेटों का भविष्य दाँव पर लगा है। फिर भी वह पूछता है -'क्या किया उन्होंने?' यह सवाल सूचना लेने का नहीं, बल्कि सच्चाई से मुँह मोड़ने का प्रयास है। हमारे साथ भी एसा ही होता है । जब हम किसी कड़वी सच्चाई को स्वीकार नहीं करना चाहते, तो सवालों के पीछे छिप जाते हैं। धृतराष्ट्र के शब्दों में भी यही दिखता है -'मामका:' (मेरे बेटे) और 'पाण्डवा:' (पांडु के बेटे)। यहाँ वह अपने और पराए की दीवार खींच रहा है। यह मोह है, यह माया है - जो हमें निष्पक्षता से नहीं, अपने पक्ष से देखने की आदत डाल देती है।

धृतराष्ट्र जानते हैं कि युद्ध शुरू हो चुका है, पर वे उस सच्चाई को स्वीकार नहीं करना चाहते। वे संजय से पूछते हैं, जैसे कोई उम्मीद बची हो कि शायद कुछ और हुआ हो। हम भी कितनी बार ऐसा करते हैं। जब कोई मुश्किल फैसला सामने हो, हम साफ-साफ उसे देखने के बजाय सवाल पूछते हैं -'क्या सच में ऐसा होगा?' 'क्या इसे टाला जा सकता है?' असल में हम जवाब नहीं, तसल्ली चाहते हैं। यह मन की वह चाल है जो सत्य से आँखें मूँद लेती है। गीता की शुरुआत ही इस मानसिक युद्धभूमि से होती है - जहाँ आँखें बंद हैं, पर सवाल खुले हैं।

(क्रमशः)

चार पीढ़ियों की काव्य-गूंज

श्री गणेश विनायक आई फाउंडेशन एवं लाईफ वर्सिटी द्वारा अभूतपूर्व आयोजन

शब्दों की संवेदना जब पीढ़ियों को जोड़ती है, तो वह सिर्फ़ साहित्य नहीं, बल्कि संस्कृति का उत्सव बन जाती है। इसी उत्सव का साक्षी बना 12 अक्टूबर 2025 का दिन, जब श्री गणेश विनायक फाउंडेशन द्वारा श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल के सभागार में 'लाइफ वर्सिटी नवगूंज' कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया।

इस आयोजन में 10 वर्ष से लेकर 75 वर्ष तक के लगभग 100 कवियों ने भाग लेकर यह सिद्ध कर दिया कि कविता उम्र नहीं, अनुभव और अभिव्यक्ति की भाषा है।

यह सम्मेलन कई मायनों में अनोखा रहा, क्योंकि एक ही मंच पर चार पीढ़ियाँ उपस्थित थीं — बचपन की मासूम कल्पनाएँ, तरुणाई की उड़ान, युवाओं का जोश, और वरिष्ठों की गहराई। कवि सम्मेलन तीन चरणों में आयोजित हुआ, जहाँ हर दौर में भावनाओं और विचारों की नई धारा प्रवाहित होती रही।

पहला सत्र- नवांकुरों की अभिव्यक्ति

कार्यक्रम के प्रथम चरण में 10 से 20 वर्ष आयु वर्ग के युवा कवियों ने मंच संभाला। इन नन्हें कवियों की रचनाओं में बचपन की सादगी के साथ-साथ विचारशीलता भी झलक रही थी। किसी ने प्रकृति पर लिखा, तो किसी ने माँ के प्रति समर्पण व्यक्त किया। इस वर्ग में नियति साहू ने अपनी भावपूर्ण कविता से सबका दिल जीतते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया।

भावना साहू को द्वितीय स्थान और ईशा सेन को तृतीय स्थान मिला। निर्णायकों ने इस वर्ग के प्रतिभागियों की कल्पनाशक्ति और आत्मविश्वास की विशेष सराहना की।

दूसरा सत्र - युवा ऊर्जा की आवाज़

दूसरे सत्र में 21 से 35 वर्ष आयु वर्ग के कवियों ने मंच पर कदम रखा। इस वर्ग में कविता के रंग कुछ और गहरे थे — समाज, प्रेम, देशभक्ति, और आत्मचिंतन के स्वर गूंजे।

आदित्य बर्मन 'आजाद' ने अपनी ओजपूर्ण कविता से सभी को प्रभावित करते हुए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

विपुल तिवारी ने अपनी संवेदनशील रचना से द्वितीय पुरस्कार जीता, जबकि राहुल साहू को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस वर्ग के कवियों ने यह संदेश दिया कि नई पीढ़ी न केवल अभिव्यक्ति में सक्षम है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी भी महसूस करती है।

तीसरा सत्र-अनुभव की गहराई

अंतिम सत्र में 35 वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ कवियों ने मंच को अपने अनुभव, भावनाओं और जीवन-दर्शन से भर दिया।

उनकी कविताएँ किसी प्रवचन की तरह नहीं, बल्कि जीवन की थमी हुई लहरों की तरह थीं — शांत, गहरी और प्रभावशाली।

कवियों ने रिश्तों, समय, समाज और मानवीय मूल्यों पर ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत कीं, जिन्होंने उपस्थित श्रोताओं को आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का संचालन संजय शर्मा 'सरल' ने अपनी सहज, विनोदी और संवेदी शैली में किया।

उन्होंने प्रत्येक कवि का परिचय इस तरह दिया कि मंच पर आते ही कवि के प्रति श्रोताओं की उत्सुकता और सम्मान दोनों बढ़ जाते थे।

मुख्य अतिथि के रूप में टी. सी. महावर (आईएएस) उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने वक्तव्य में कहा — 'कविता केवल भावों की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज के मनोविज्ञान का आईना है। ऐसे आयोजनों से संवेदना और संवाद दोनों जीवित रहते हैं।'

विशिष्ट अतिथि डॉ. उदयभान सिंह चौहान ने कहा कि साहित्य और कविता मानव जीवन की आत्मा हैं, जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखती हैं।

इस अवसर पर श्री गणेश विनायक आई हॉस्पिटल के डॉ. अनिल गुप्ता एवं **श्री गणेश विनायक फाउंडेशन की डॉ. चारुदत्त कलमकर** ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए।

डॉ. अनिल गुप्ता ने कार्यक्रम के समापन सत्र में अपने उद्बोधन में 'पॉजिटिव हेल्थ जोन' के होलिस्टिक कॉन्सेप्ट पर प्रकाश डालते हुए कहा- 'स्वास्थ्य केवल शरीर का नहीं, बल्कि मन और चेतना का संतुलन भी है। जब व्यक्ति सकारात्मक सोचता है, तो उसका शरीर भी उसी ऊर्जा के साथ स्वस्थ प्रतिक्रिया देता है।'

उनके इस विचार ने उपस्थित सभी को यह सोचने पर विवश किया कि **कविता और स्वास्थ्य-दोनों का मूल एक ही है- 'सकारात्मकता और संतुलन'।**

संवेदना और संवाद का संगम

लाइफ वर्सिटी कवि सम्मेलन केवल एक साहित्यिक आयोजन नहीं था, बल्कि संवेदना और संवाद का ऐसा मंच था, जहाँ हर आयु वर्ग ने एक-दूसरे से कुछ सीखा, कुछ साझा किया।

बच्चों ने वरिष्ठों से अनुभव पाया, तो वरिष्ठों ने युवाओं की ऊर्जा से प्रेरणा ली।

कविता की यह यात्रा यह भी दिखाती है कि जब मंच समावेशी होता है, तो शब्दों की सीमाएँ मिट जाती हैं।

हर कविता एक कहानी कहती है — किसी सपने की, किसी संघर्ष की, या किसी प्रेम की — और यही कहानी इंसान को जोड़ती है।

अंत में, सभी प्रतिभागियों और अतिथियों ने श्री गणेश विनायक ऑय फाउंडेशन के इस प्रयास की सराहना करते हुए इसे 'पीढ़ियों को जोड़ने वाला काव्य महोत्सव' बताया।

कार्यक्रम ने न केवल काव्य की परंपरा को आगे बढ़ाया, बल्कि यह संदेश भी दिया कि सृजनशीलता तब सबसे सुंदर होती है जब वह साझा होती है।

लाईफ वर्सिटी नवगूँज

कवि सम्मेलन 2025

www.phzinfo.com

Positive Health Zone

Integrated Holistic Health Care System

Unique Wellbeing Center

Holistic Healthcare Team

Our INTEGRATED SERVICES

Holistic Path Of Wellness & Wellbeing

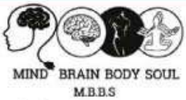

1. **Personal Energy Blueprint at Quantum Veda Lab with Latest Quantum Devices-**

   Aura, Chakra, Biofield, Lifeforce Energy Analysis.

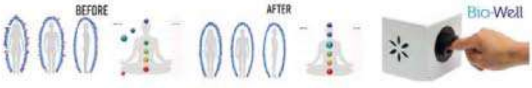

2. **Digital Nadi Parikshan Modern Nadi Veda Pulse -**

   Personality Analysis Body Type, Mind Type, Energy Type.

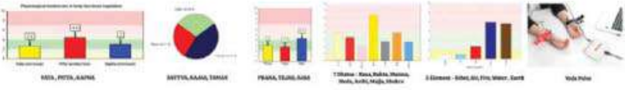

3. **Life Style Clinic**

   Personalised Diet Plan, Lifestyle Plan, Day Plan, Detox Plan as per your Quantum Analysis.

4. **Body Detox & Rejuvenation with Kerala Ayurveda Panchkarma.**

5. **Mind Detox & Stress Management with NLP & Counselling.**

6. **Inner Alingment, Chakra Balancing with PNP Meditation.**

Get In Touch
9109185028, 9109185025

A-41, Amrapali Society,
Near Ganga Diagnostics, Raipur, Chhattisgarh

www.phzinfo.com